वर्ष 48 | अंक 9 | सितम्बर 2021

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 48 ● अंक 9 ● सितम्बर 2021 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
38. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. कभी न भूलो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

7. प्रभु की रचना ...
: नरेश आहूजा

7. जीवन का नियम
: महेन्द्र सिंह वर्मा

17. आओ कुछ उपकार करें...
: सीताराम 'मनमौजी'

23. अच्छी बातें
: महेन्द्र सिंह शेखावत

23. पर्यावरण और बच्चे
: कमल सिंह चौहान

31. सीखें
: रामअवध राम

31. फुलवारी
: नदीम हसन

39. श्रम के फूल
: भानुदत्त त्रिपाठी

47. हिन्दी से है हिन्दुस्तान
: दीपक कुमार 'दीप'

47. हिन्दी एक गुलशन
: डॉ. सेवा नन्दवाल

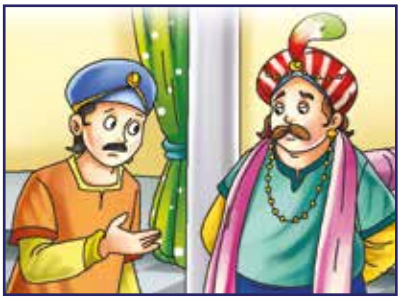

कहानियां

8. आगे बढ़ने की सीख ...
: रामकुमार सेवक

10. डाकू से बने सन्त कवि
: चन्द्रभान निरंकारी

11. भक्त प्रह्लाद की ...
: डॉ. विद्या श्रीवास्तव

18. सबसे जहरीला कौन?
: रेनू सैनी

25. अनोखा उपहार
: डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

32. मूर्ति से प्रेरणा
: कमल सौगानी

40. कोयल और कौवा
: अमर सिंह शौल

43. शिक्षक की भूमिका
: रूपनारायण काबरा

46. दो प्रेरक-प्रसंग
: नेहा नागपाल

लेख/विशेष

16. अनोखा परिन्दा
: कमल जैन

20. ह्वेल शार्क
: परशुराम शुक्ल

24. पहेलियां
: राधा नाचीज

28. मृत सागर ...
: दीपांशु जैन

42. अनुशासित चींटियों ...
: कैलाश जैन

सबसे पहले

माँ

शिक्षक भी, गुरु भी

जब हमारा जन्म होता है उसी समय से ही हमारी शिक्षा का क्रम आरम्भ हो जाता है। कुछ न बोल पाने के कारण भी यदि बच्चे को कोई दर्द हो अथवा भूख लगी हो तो वह रोकर कह देता है और माँ उसकी हर पीड़ा को शान्त कर देती है। माँ की ममता और प्यार बच्चे को रोने नहीं देती और उसकी हर चाह को बिना कुछ कहे ही माँ समझ जाती है और उसे पूरा भी करती है।

हम सभी बच्चे ही थे तब हमारी हर इच्छा को किसी न किसी ने तो पूरा किया है तो क्या हम भी बिना कहे किसी की इच्छा पूरी करते हैं? क्या हम भी किसी भूखे की भूख को अपनी भूख समझकर उसकी सहायता करते हैं।

प्रकृति भी हर समय हमारी इच्छा की पूर्ति करती रहती है। पृथ्वी हमें पेड़-पौधों के द्वारा भोजन देती है। जल हमारी प्यास बुझाता है। सूर्य से निरन्तर रोशनी मिलती है आदि। इस तरह प्रकृति के हर तत्व से हमें शिक्षा भी मिलती रहती है। जीव-जन्तु, पशु-पक्षी हमें कुछ न कुछ अवश्य सिखाते रहते हैं। चाहे हम प्रकृति को जड़ कहते हैं फिर भी उसी के द्वारा ही हम चेतन में रह सकते हैं। हमारे प्राणों में ऊर्जा संचारित हो सकती है। प्रकृति किसी से भी असमानता का भाव नहीं रखती। सबके साथ एक-सा ही भाव रखती है। इस प्रकार प्रकृति हमारी परोक्ष शिक्षक है।

अगर हमारे जीवन में माँ ही न होती तो क्या हम जन्म ले सकते थे? नहीं, कभी नहीं। माँ हमें जीवन भी देती है और जीवन के पहले क्षण से शिक्षा भी देती है। माँ हमेशा बच्चे को ऊँचा उठाना चाहती है और उसकी हर सम्भव सहायता भी करती है। विषम परिस्थितियों में भी केवल माँ ही होती है जो अपने बच्चों को सम्भाल कर रखती है। चाहे बच्चे कितने ही बड़े, पढ़े-लिखे, पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त हो जाएं। माँ अपने कर्म से शिक्षा देती है, केवल अपनी बातों से नहीं।

इस युग में भी एक माँ जिसने अपने पति एवं गुरु को खो दिया। विपरीत परिस्थितियों में भी उसने अपने अदम्य साहस से, कर्म से, भक्ति से निरंकारी मिशन को अपने प्रेम से सींचा। इस माँ का प्यार, स्नेह, शिक्षा, सन्देश हर मानव प्राणी के लिए एक जैसा ही रहा। अपनी करुणा से, प्रेरणा से और ज्ञान से कि हर व्यक्ति परमात्मा को सद्गुरु से जानकर जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो सके। ऐसी थी हमारी ममतामयी निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर जी।

माँ की पीड़ा माँ ही जानती है। माँ का हृदय केवल माँ का ही होता है। माँ प्रेम की पराकाष्ठा होती है। प्रेम उसका स्वभाव होता है। दया-करुणा, क्षमा उसके अभिन्न अंग होते हैं। ऐसी ही हमारी माँ थीं सद्गुरु माता सविन्दर जी महाराज। जिन्होंने अपने सद्गुरु एवं पति को उस समय खोया जब वह खुद शारीरिक रूप से अस्वस्थ थीं। फिर भी मानव-जाति के उत्थान के लिए निरंकारी मिशन की बागडोर को सम्भाला और अन्त समय तक सभी को यही समझाया कि एक को जानकर ही एक हुआ जा सकता है। एकत्व में जिया जा सकता है। आपने पूर्ण जगत को स्वयं में जाना और स्वयं को पूरे जगत में। इस तरह की शिक्षा देने वाली विभूतियों को हम सभी आदर सहित नमन करते हैं और उनकी शिक्षाओं को जीवन में, आचरण में लाकर उनकी शिक्षा से समस्त प्राणियों को लाभान्वित कर सकते हैं। संसार के सभी शिक्षकों की शिक्षा को प्रणाम।

■ विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 240

अल्लाह ईश्वर गाड वाहेगुरु एसे दे हन सारे नाम।
राम मुहम्मद नानक ईसा इक तों इक प्यारे नाम।
निरंकार इस समें दा नां है एह वी कोई पुकारे नाम।
बिन वेखे बिन जाणे ऐ पर कम्म न औण उचारे नाम।
पहलों दर्शन मगरों प्रीति फिर भावें कोई जाप करे।
कहे अवतार बिना रब वेखे जाप नहीं विरलाप करे।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा एक है। यह एक है लेकिन इसके नाम अनेक हैं। संसार में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्मों को मानने वाले एक प्रभु-परमात्मा को ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड आदि अलग-अलग नामों से श्रद्धापूर्वक पुकारते हैं। इसके सामने अपनी याचना, प्रार्थना रखकर आशीर्वादों की कामना करते हैं। समय-समय पर संसार में आकर मानव मात्र का कल्याण करने वाले भगवान श्रीराम हों या हज़रत मुहम्मद साहब अथवा गुरु नानक देव जी हों या ईसा मसीह जी सभी एक से एक प्यारे नाम हैं, जिनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाकर चलने का प्रयास भक्तजन करते हैं। यह निराकार परम सत्ता भक्तों के प्रेमवश मानव तन धारण करके संसार में आता है और जगत का कल्याण करता है।

बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि आज समय के सद्गुरु ने निरंकार नाम बताया है जो आकार रहित होकर सम्पूर्ण जगत में समाया हुआ है। इस निरंकार को अंग के संग व्यापक देखकर भक्तजन इसका नाम लेते हैं। इसको रिझाने का प्रयास करते हैं। इस निरंकार-प्रभु का दर्शन सद्गुरु की कृपा से संभव होता है। संसार में लोग बिना देखे, बिना जाने प्रभु का नाम लेते हैं जो काम नहीं आता। जिसे देखा नहीं, जिससे कोई व्यवहार नहीं किया, उसके साथ प्रीत भी नहीं बढ़ती और उसका कोई लाभ भी नहीं मिलता।

भक्तजनों को चेतन करते हुए बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं पहले इस अविनाशी प्रभु को सद्गुरु की शरण में आकर जान लो, इसके दर्शन कर लो तभी इससे प्रीत पैदा होगी। प्रभु से प्रीत होगी तो प्रभु का नाम लेना भी सार्थक होगा। तभी वह सुमिरण करना भी काम आयेगा और वह प्रभु जाप भी सच्चा जाप कहा जायेगा। प्रभु को देखे बिना इसका नाम सुमिरण, इसका जाप करना विलाप (रोने) करने के समान है जो किसी काम नहीं आता।

बाबा अवतार सिंह जी दुनिया के सभी धर्मावलम्बियों को सजग-सचेत करते हुए कह रहे हैं परमात्मा का नाम लो, परमात्मा को पल-पल याद करो पर इसे जानकर ताकि तुम्हारा नाम सुमिरण सार्थक हो और तुम भक्तिमय जीवन का आनन्द उठा सको।

भावार्थ: हरनीत निषाद

संकलन : श्रीराम प्रजापति

अनमोल वचन

❖ हमें उन विचारों से दूर रहना है जो हमें एक आदर्श मानव बनने में बाधा उत्पन्न करते हैं। अक्सर सुनते हैं–"कुछ भी बनो मुबारक है, पहले पर इन्सान बनो।" बस इसी बात का ध्यान रखना है। "ओहदे, शोहरत और माया किसी काम के नहीं, यदि हम अच्छे इन्सान नहीं बन सके।"

❖ निरंकार पर अपने जीवन की डोर को छोड़ना या स्वयं पकड़ के रखना, ये चुनाव हमें स्वयं करना होता है। एक भक्त सदा निरंकार पर ही पूर्ण समर्पण करके अपना हर कर्म करता है।

– सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

❖ गुस्सा इंजन है, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये हैं।

– महात्मा गाँधी

❖ प्रतिकूल परिस्थितियों में कुछ व्यक्ति टूट जाते हैं जबकि कुछ रिकॉर्ड तोड़ देते हैं।

– विलियम ए. वार्ड

❖ सत्सम्पर्क से लोहा भी सोना बन जाता है।

–वशिष्ठ

❖ जीवन का उद्देश्य है- आगे बढ़ते ही जाना।

– जॉनसन

❖ धन के द्वारा अमरत्व प्राप्ति असम्भव है।

– स्वामी शिवानन्द

❖ उत्तम स्वास्थ्य ही धरती का सबसे बड़ा वरदान है।

– बौद्ध शिक्षा

❖ परमेश्वर उसकी सहायता करता है जो दृढ़निश्चय के शिखर पर चढ़ता है।

– पंचतन्त्र

❖ ईश्वर की निगाह में सभी बराबर हैं। जीवों से प्रेम करना वास्तविक पूजा है।

❖ जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश समस्त संसार में व्याप्त है, वैसे ही सभी जीवों में ईश्वर का निवास है।

– सन्त रविदास

❖ मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्तव्य है।

– आचार्य विनोबा भावे

❖ बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों की गलती से सीखता है।

– पी सायरस

❖ दीपक के प्रकाश की तरह अच्छे काम की ख्याति भी चारों ओर फैलती है।

– विलियम शेक्सपियर

❖ आशा कभी आपको छोड़कर नहीं जाती है, आप इसे छोड़ते हैं।

– जॉर्ज वीनवर्ग

❖ स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेना सबसे श्रेष्ठ और महानतम विजय होती है।

– प्लेटो

❖ जिसके पास उम्मीद है, वह हार कर भी नहीं हारता।

– अज्ञात

कविता : नरेश आहूजा

प्रभु की रचना...

प्रभु की रचना है यह सारी,
चाहे नर है या है नारी।
एक दूजे से बढ़कर दोनों,
एक दूजे की महिमा न्यारी।।

अपना-अपना रोल निभा रहे,
पूरी कर रहे जिम्मेदारी।
तुलना किससे किसकी करनी,
सारी सूरते हैं जब प्यारी।।

प्यार करें सम्मान करें हम,
एक दूजे पर जाएं वारी।
दोनों जब मिलकर हैं चलते,
होती उनकी शान न्यारी।।

सबमें रब का रूप ही देखें,
अब करनी ऐसी तैयारी।
प्रभु की लीला प्रभु ही जाने,
करें धन्यवाद हम और रहे आभारी।।

पर याद रहे नरेश याद रहे हमें,
चाहे नर है या हम नारी।
प्रभु की रचना है हम सारी,
अपनी-अपनी जिम्मेदारी।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह वर्मा

जीवन का नियम

जीवन का यह नियम बनाओ,
सच बोलो और सच अपनाओ।
फूलों के संग कांटें भी हैं,
हँसकर उनको भी अपनाओ।।

हिंसा, क्रोध, असत्य, लोभ, मद,
पास कभी न इनके जाओ।
छोड़ो आलस भेदभाव को,
दया-धर्म को सब अपनाओ।।

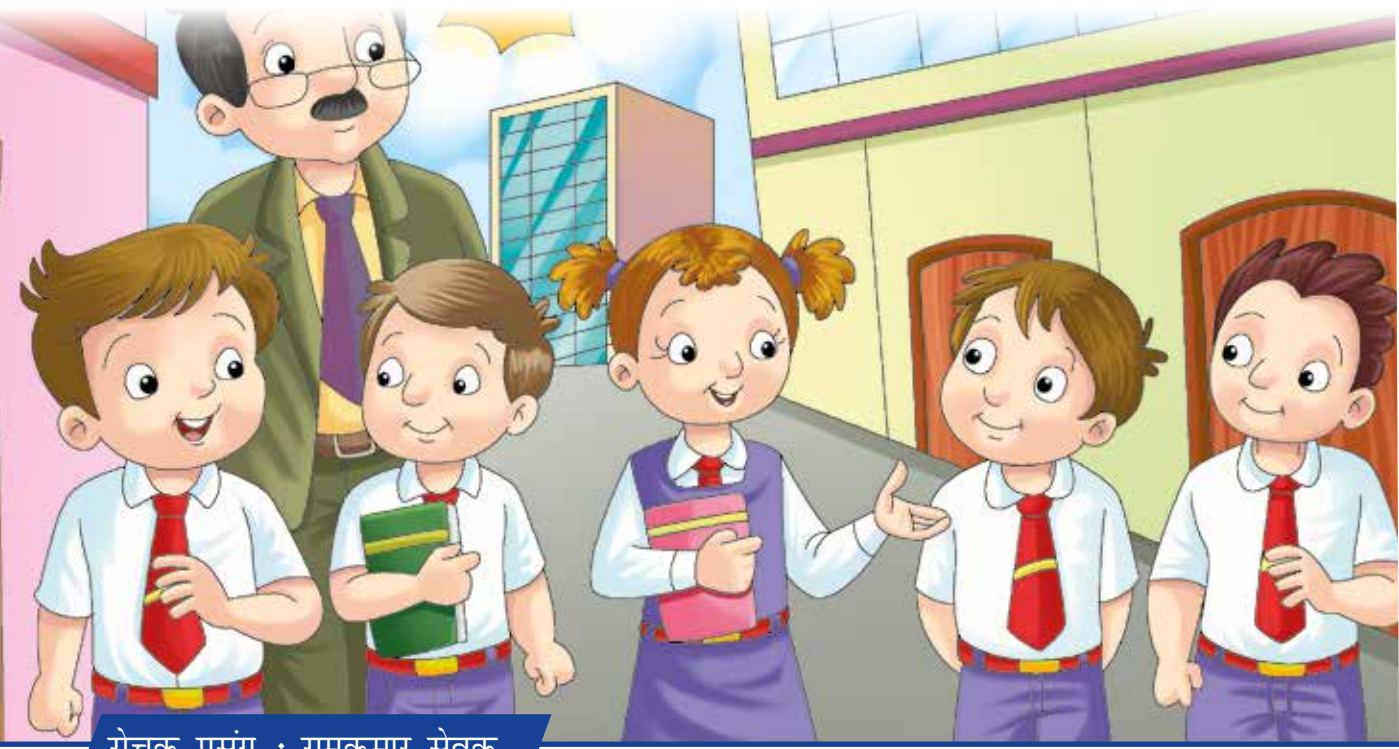

रोचक प्रसंग : रामकुमार सेवक

आगे बढ़ने की सीख मिली नदी से

वे पाँच बच्चे थे। घर से पढ़ने के लिए जा रहे थे। लॉकडाउन के बाद स्कूल अभी तक सही तरह से नहीं खुले हैं फिर भी ये बच्चे पढ़ाई के प्रति चेतन हैं। यह देखना सुखद था। मुझे अपना बचपन याद आ गया।

बचपन में मैं गाँव में रहता था। गाँव के स्कूल छोटे-छोटे होते थे हालांकि गाँव में घर बड़े होते थे।

उन घरों में सिर्फ इंसान ही नहीं रहते थे। गाय, भैंस, बकरी आदि के लिए भी उनमें जगह होती थी।

गाँव के पास नदी थी। नदी से हम आगे बढ़ना सीखते थे। नदी कभी पीछे नहीं लौटती। इससे हमने सीखा कि यदि कभी हार जाओ तब भी मन को कमजोर न होने देना। हारकर कभी पीछे नहीं लौटना।

नदी में से रेत निकलती थी। मैं, अनिल और विजयपाल अक्सर नदी के किनारे पड़े रेत में पांव डालकर घर बनाते थे। हमारे साथ लड़कियां भी खेलती थीं चूंकि गाँव में मासूमियत बड़ी उम्र तक बची रहती थी।

सब अपने-अपने पैरों के ऊपर रेत डालकर घर बनाते थे।

कौशल मेरी चचेरी बहन थी। वह हमारी ही कक्षा में पढ़ती थी। हमारे आंगन में नीम का पेड़ हुआ करता था। कौशल ने रेत के उस घर में भी एक पेड़ उगा दिया।

यह दूसरी बात है कि जब घर से माँ की आवाज कान में पड़ती तो वही घर जिसके ऊपर

हम झंडा लगाते थे और आंगन में पेड़ उगाते थे। उसमें गाय-भैंस बांधने के लिए जगह भी बनाते थे। हमारे ही पैरों की रफ्तार से ढह जाता था। इसके बावजूद जब भी हम नदी के किनारे जाते, घर बनाने का खेल जरूर खेलते थे।

मेरे आगे-आगे पाँच बच्चे पढ़ने के लिए जा रहे थे और अपनी बचपन की यादों के साये में विचरने के कारण मैं भी उन्हीं की कतार में आ गया था। इस प्रकार मेरा नंबर छठवां था। लेकिन मैं घर जा रहा था चूंकि मुझे दफ्तर जाना था।

उन सबकी माताओं ने उन्हें पढ़ने के लिए ही भेजा था चूंकि उन सबके हाथों में किताबें थीं। एक-दो बालक किताबों के बिना भी थे। मेरा अंदाजा था कि वे किताबों के बिना ही पढ़ेंगे। किताबों के बिना पढ़ना नहीं कहा जा सकता। लेकिन प्रकृति से जो हम सीखते हैं उसकी कोई किताब तो नहीं होती।

ओफ्फोह, मैं भी क्या-क्या सोचने लगा? आ गयी न उम्र बीच में जबकि थोड़ी देर पहले मैं भी यादों में, बचपन के साथियों के साथ खेल रहा था।

मुझे दफ्तर जाना था लेकिन अपने बचपन के दिनों को याद करने की कोशिश में मैं उन बच्चों के साथ चलता रहा।

यह महानगर का एक गाँव है। यहाँ नदियां नहीं होतीं, नाले होते हैं। हमारे गाँव में तो नदी थी जिसके किनारे रेत के ढेर पड़े होते थे। उन ढेरों में जैसे हमारा खजाना था। मौका मिलते ही माँ की नज़र बचाकर हम रेत के ढेर की तरफ बढ़ जाते थे।

ये बालक तो समझदार लगते हैं जिनकी किताबों से दोस्ती थी हमारी दोस्ती तो रेत के ढेर से थी। स्कूल में तो हम पिटाई के डर से जाते थे।

हमारी गली में भी आजकल रेत का ढेर पड़ा हुआ है क्योंकि एक मकान बन रहा है।

वे बालक उस रेत के ढेर के पास रूके। उन्होंने किताबें एक तरफ रखीं और वहाँ बैठकर छोटे-छोटे घर बनाने लगे। मैं भी वहीं रूक गया और अपने बचपन को उनमें देखने लगा लेकिन मुझे बुरा लग रहा था चूंकि वे बीच में ही रूक गए थे पढ़ने जाने की बजाय।

मुझे उनका खेल बुरा लग रहा था जबकि बचपन के दिनों में मैं खुद भी यही करना पसंद करता, स्कूल जाने की बजाय।

मैंने उन्हें डांटकर कहा– क्या घर से खेलने के लिए ही निकले हो? अभी जाकर पढ़ो, बाद में खेलना। मैंने आदेश दिया।

उनमें से एक बच्चा बोला– अंकल, अभी तो साढ़े नौ बजे हैं। दीदी तो दस बजे से पढ़ाएंगी।

मुझे बहुत खिसियाहट हुई चूंकि बच्चे लापरवाह नहीं थे। चूंकि उन्हें पढ़ाई के महत्व का ज्ञान था। हाँ, मैं एक बार फिर अपने बचपन के दिनों में लौटने में सफल नहीं हो पाया था।

मुझे ध्यान आया कि क्या नदी आज भी उसी चाल से बह रही होगी जैसी तब बहा करती थी। जिसने हम सबको सदा आगे बढ़ने का सबक सिखाया था। ■

प्रेरक-प्रसंग : चन्द्रभान निरंकारी

डाकू से बने सन्त कवि

राजस्थान के निरंजनी सम्प्रदाय के सन्त कवि हरिदास जी की युवावस्था की बात है। उन दिनों वह हरिसिंह के नाम से जाने जाते थे। कुसंगति में पड़ जाने के कारण वह अपराधों में प्रवृत हो गए थे। वह डीडवाणा क्षेत्र के जंगलों में गिरोह के साथ रहकर राहजनी करते थे। एक दिन हरिसिंह अपने गिरोह के साथ किसी यात्री को लूटने के इरादे से खड़े थे। उन्होंने अंधेरे में एक व्यक्ति को आते देखा तो लाठी दिखाकर उसे रोक लिया। नजदीक आने पर देखा कि वह एक साधु था। उसके थैले में कुछ दवाएं तथा कुछ सिक्के थे। डाकू ने सिक्के छीनकर जेब में रख लिए और थैला कब्जे में ले लिया। फिर साधु से पूछा– इस कटोरदान में क्या है?

साधु ने उत्तर दिया– मैं एक मरणासन्न वृद्धा के लिए शहर से दवा खरीदकर ले जा रहा हूँ। कटोरदान में मेरे इष्टदेव ठाकुर हैं। तुम लोग चाहे जो ले लो किन्तु दवाएं तथा ठाकुर जी मुझे वापस कर दो।

हरिसिंह का मन ग्लानि से भर उठा कि उसने एक परोपकारी सन्त को लूटा। उसने रुपये वापस कर दिए तथा भविष्य में राहजनी न करने का संकल्प लिया। उसके बाद हरिसिंह ने तीखी डूंगरी नामक पहाड़ी पर पहुँचकर साधना की। वह सन्त हरिदास निरंजनी बन चुके थे। राजस्थान के निर्गुण कवि भक्तों में स्वामी हरिदास निरंजनी का नाम अग्रणी माना जाता है। ■

पौराणिक कथा : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

भक्त प्रह्लाद की दानशीलता

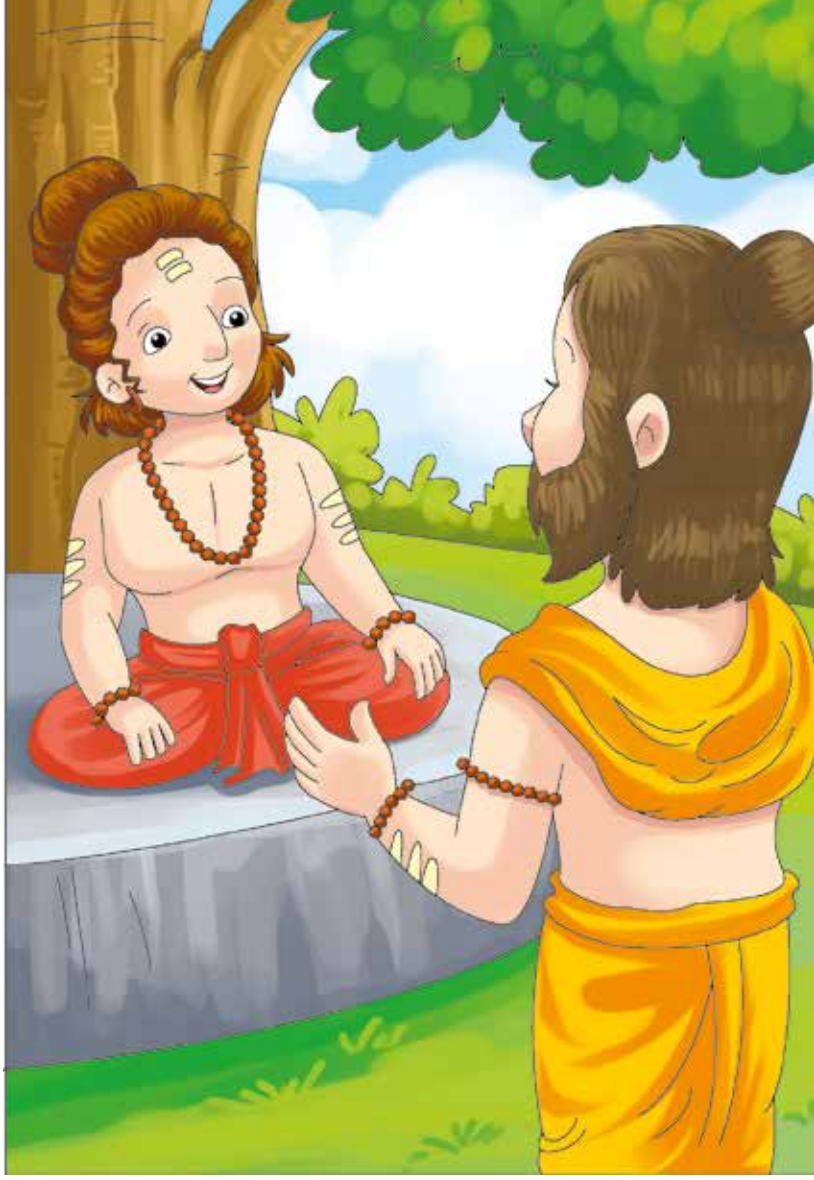

एक बार देवराज इन्द्र का पुण्य और ऐश्वर्य कम होने लगा। इन्द्र चिन्ताग्रस्त होकर गुरु बृहस्पति की शरण में पहुँचे। देवगुरु बृहस्पति बोले– 'आप राजर्षि प्रह्लाद के पास जाएं, वे ही ऐश्वर्य प्राप्ति के उपाय बतलायेंगे।'

इन्द्र ने तुरन्त भिक्षुक का वेश बनाया और पहुँच गये राजर्षि प्रह्लाद के पास। विनम्रता के साथ इन्द्र बोले– 'गुरुदेव, ऐश्वर्य-प्राप्ति का कुछ उपाय बताइए?'

प्रह्लाद बोले– 'शीलवान व्यक्तित्व ही समस्त ऐश्वर्य का मूल है जो व्यक्ति चरित्रवान होता है उसका वैभव कभी नष्ट नहीं होता।' इन्द्रदेव प्रह्लाद की बात से संतुष्ट हो गए।

भिक्षुक को अतिथि मानकर प्रह्लाद फिर इन्द्र से बोले– 'कभी कोई और काम मेरे योग्य हो तो बताइए?' प्रह्लाद ने यह बात अतिथि धर्म के कारण पूछी थी किन्तु चलते वक्त इन्द्र ने राजर्षि प्रह्लाद से ही 'शील' मांग लिया। इन्द्र को याचक समझकर प्रह्लाद ने अपना 'शील' इन्द्र को दान कर दिया।

जैसे ही प्रह्लाद ने अपना शील दान किया वैसे ही प्रह्लाद के शरीर से चार तेजस्वी पुंज निकले। प्रह्लाद ने इन तेज पुंज से परिचय पूछा– 'आप लोग कौन हो और मेरे शरीर से बाहर क्यों जा रहे हो?

एक पुंज ने उत्तर देते हुए कहा– 'राजर्षि, मैं 'शील' हूँ। मेरे ये तीन साथी– धर्म, सत्य और वैभव हैं। जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ ये तीन भी रहते हैं।

साधारण भिक्षुक का वेश धारण कर इन्द्र ने आपसे छलपूर्वक 'शील' मांग लिया है। अब आपको धर्म, सत्य और वैभव से भी वंचित रहना पड़ेगा।

प्रह्लाद ने 'शील' की बात सुनकर जरा भी दु:ख या पश्चाताप नहीं किया। उन्होंने शील संग्रह के लिए पुन: प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
– अजय कालड़ा

चलते-चलते टोपीवाला थक गया तो उसने पेड़ के नीचे विश्राम करने की सोची।
वह टोपियों ने भरा अपना थैला पेड़ के नीचे रखकर लेट गया।
वह इतना थका हुआ था कि लेटते ही उसे नींद आ गई।

कुछ देर बाद उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि उसका थैला खाली है।
वह अपने थैले को खाली देखकर हैरान रह गया।
टोपी बेचने वाले ने चारों तरफ़ अपनी टोपियों को ढूँढा।

शिक्षा : हमें सदैव समझदारी से कार्य करना चाहिए।

लेख : कमल जैन

लम्बी चोंच और लम्बी गर्दन का अनोखा परिन्दा

स्टोर्क एक अनोखा जलचर पक्षी है। झीलों, तालाबों और नदियों के किनारे मिलने वाले इस पक्षी की गर्दन और चोंच लम्बी होती है। पंखों का रंग भूरा व श्वेत होता है। यूं इसके शरीर पर पीले श्वेत, काले, लाल धब्बे होते हैं। वैसे इसे कई नामों से पुकारा जाता है। जैसे लकलक, गलगल, घोंघिल, जाघिल और गबर आदि। आमतौर पर इसकी ऊँचाई 3 से 5 फुट तक होती है। अब तक पक्षी वैज्ञानियों ने इसकी लगभग दो दर्जन से भी अधिक प्रजातियां खोज निकाली हैं। मूल रूप से यह परिन्दा मध्य यूरोप का वासी है। सर्दियों के मौसम में यह गर्म प्रदेशों में भ्रमण करना पसन्द करता है।

इस परिन्दे की भव्य उड़ान इतनी सधी हुई होती है कि शायद दुनिया में दूसरा कोई भी पक्षी उड़ने के मुकाबले में इसका मुकाबला नहीं कर सकता। मादा एक बार में 2 या 3 अंडे देती है। जिनका वर्ण श्वेत, पीला या दूधिया होता है। करीब तीन सप्ताह उपरान्त अंडों में से बच्चे निकलकर फुदकने लगते हैं। मादा इन्हें अपनी चोंच से बड़ी तरकीब से भोजन खिलाती है। जब ये बच्चे दो माह के हो जाते हैं तो इन्हें उड़ना भी सिखाती है। चार माह उपरान्त ये बच्चे अपना भोजन खुद तलाशने लगते हैं।

यह पक्षी अपना घोसला नदी, झील, तालाब के किनारे खड़े घने पेड़ों पर बनाना अधिक पसन्द करता है। इसका घोसला लकड़ी की डंडियों-सींकों से बना होता है। धीरे-धीरे नर मादा मिलकर इस घोसले की लम्बाई-चौड़ाई बढ़ाते रहते हैं। रात्रि में नर-मादा दोनों बारी-बारी से जागकर शत्रुओं से अपनी रक्षा करते हैं।

इस पक्षी को बरसात का मौसम अधिक अच्छा लगता है। अपने समूह में एकत्रित होकर ये खूब शोर मचाते हैं तथा एक-दूजे से चोंज मिलाकर कई तरह के खेल भी खेलते हैं। मध्य यूरोप के कई शहरों में तो इस पक्षी को तोते की तरह बड़े चाव से पाला भी जाता है। यह घर, खेत या बगीचे की रक्षा बड़ा चौकन्ना होकर करता है। अपने मालिक के प्रति खतरा महसूस करते ही यह अपनी भाषा में शोर मचाने लगता है। जिसे सुनकर मालिक अपनी रक्षा के प्रति सजग हो जाता है।

स्टोर्क का जीवन खतरे में है। इसका शिकार निरन्तर जारी है। यूं यह पक्षी पर्यावरणरक्षक भी है क्योंकि यह ऐसे कई कीटों को हजम कर जाता है जो प्रकृति को विनाश के कगार की ओर धकेलते हैं।

आओ कुछ उपकार करें हम

पर्यावरण का सुधार करें हम।
आओ कुछ उपकार करें हम।

पानी बचायें, पानी बचायें पानी की कमी है भारी।
गर्मी में पानी बिकता है, प्यासी-फिरती दुनियां सारी।
पानी को न बेकार करें हम।

पेड़ लगायें, पेड़ लगायें पेड़ों की कमी है भारी।
पेड़ काटकर हमने, धरा की शक्ल है बिगाड़ी।
पेड़ लगाने का जतन बारम्बार करें हम।

रेत निकाली नदियों से, नदियां खाली कर डाली।
आगे क्या विपदा आयेगी, भूल गये सब देखभाली।
नदियों की करें सफाई, आओ सेवादार बनें हम।

अपशिष्ट पदार्थों को जलाकर, पर्यावरण बिगाड़ा।
वायु सब हो गई प्रदूषित, खुद का हमने किया कबाड़ा।
प्रदूषण दूर करें 'मनमौजी' आज अभी इकरार करें हम।

बाल कहानी : रेनू सैनी

सबसे जहरीला कौन?

वीरनगर में वीरसिंह नामक राजा राज्य करते थे। वे बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में प्रजा को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं थी। उनका मुख्य सलाहकार संपतसिंह वृद्ध हो गया था। इसलिए अब वह पहले जैसी चुस्ती-फुर्ती से काम नहीं कर पाता था। एक दिन संपतसिंह बोला, ''महाराज, मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझसे पहले की तरह काम नहीं होता। कृपया आप अपने लिए किसी युवा और योग्य सलाहकार को चुन लीजिए।''

संपतसिंह की बात पर वीरसिंह बोले, ''नहीं-नहीं, हम तुम्हारे रहते दूसरा सलाहकार रखने की सोच भी नहीं सकते।''

इस पर संपतसिंह बोला, ''महाराज, 'कुछ समय तक नया सलाहकार मेरे साथ रहेगा तो मैं अपने अनुभव से उसे बहुत कुछ सिखा दूंगा।'' संपतसिंह का सुझाव वीरसिंह को पसंद आया। उन्होंने अपना सलाकार चुनने के लिए घोषणा करवा दी।

दूर-दूर से आए अनेक नवयुवक राजमहल में एकत्रित हो गये। वीरसिंह बोले, ''तुम उनकी परीक्षा कैसे लोगे?''

संपतसिंह बोले, ''महाराज, मैं एक ऐसा प्रश्न पूछूंगा जिसका जवाब वही व्यक्ति दे पाएगा जो समझदार, ईमानदार और विद्वान होगा।

निर्धारित दिन सभी नवयुवक राजदरबार में उपस्थित हो गये। संपतसिंह ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और बोले, ''मैं आप सभी से केवल एक प्रश्न पूछूंगा और जो उसका सही जवाब देगा, उसे ही राजा का सलाहकार चुन लिया जाएगा।''

केवल एक ही प्रश्न सुनकर सभी नवयुवक खुशी से चहक उठे। सबको लगा केवल एक सवाल का जवाब देना तो बहुत सरल है।

संपतसिंह बोले, ''विद्वजनों, कृपया यह बताएं कि सबसे तेज काटने वाला और जहरीला कौन होता है?'' संपतसिंह के प्रश्न पर सभी नवयुवक इसका जवाब सोचने लगे। एक नवयुवक राजा से बोला, ''महाराज, सबसे तेज काटने वाला ततैया

होता है। उसके काटने पर इंसान की चीख निकल जाती है।'' उसका जवाब सुनकर संपतसिंह चुप हो गए।

दूसरा नवयुवक बोला, ''महाराज, मेरी नजर में तो सबसे तेज काटने वाली मधुमक्खी है।''

तीसरे ने कहा, ''मेरे नजरिए से तो बिच्छू सबसे तेज काटता है।''

चौथा नवयुवक बोला, ''महाराज, सांप का काटा तो पानी भी नहीं मांगता। इसलिए वही सबसे तेज काटने वाला वही हुआ।'' इस प्रकार सभी नवयुवक अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार जवाब देते रहे लेकिन संपतसिंह को किसी का भी जवाब संतोषजनक नहीं लगा।

अब केवल एक नवयुवक ही जवाब देने से बचा हुआ था। वह नवयुवक पहरावे से साधारण लग रहा था। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। संपतसिंह उस नवयुवक की ओर देखकर बोले, ''अभी तुमने जवाब नहीं दिया। तुम इस बारे में क्या कहना चाहते हो?''

संपतसिंह की बात सुनकर वह बोला, ''मेरी दृष्टि में तो सबसे ज्यादा ज़हरीले एक नहीं बल्कि दो होते हैं।'' वह युवक बोला, ''एक निंदक और दूसरा चाटुकार।''

यह जवाब सुनकर राजा प्रश्नवाचक मुद्रा में युवक को देखने लगा। अन्य लोग भी युवक की ओर देखते हुए बोले, ''भला ये दोनों जहरीले कैसे हुए? कृपया विस्तार से बताएं।''

इस पर युवक बोला, ''राजन् निंदक के हृदय में निंदा द्वेष रूपी जहर भरा रहता है। वह निंदा करके पीछे से ऐसे काटता है कि मनुष्य तिलमिला उठता है।'' उसके इस जवाब पर संपतसिंह बोले, ''बिल्कुल सही।''

अब युवक दोबारा बोला, ''दूसरा जहरीला होता है चाटुकार जो अपनी वाणी में मीठा विष भरकर ऐसी चापलूसी करता है कि मनुष्य अपने दुर्गुणों को गुण समझकर अहंकार के नशे में चूर हो जाता है। चापलूस की वाणी चापलूस पसंद व्यक्ति के विवेक को काटकर जड़मूल से नष्ट कर देती है। अनेक ऐसे उदाहरण सामने हैं जिनमें निंदक व चापलूस ने मनुष्य को इस प्रकार काटा कि वे जड़ से समूल नष्ट हो गए।'' युवक का जवाब सुनकर राजा समेत सभी दरबारी उनसे पूरी तरह सहमत हो गए।

युवक की बात सुनकर संपतसिंह राजा से बोले, ''महाराज, लीजिए आज से आपको एक नया और समझदार सलाहकार मिल गया है।''

लेख : परशुराम शुक्ल

ह्वेल शार्क
(Whale Shark)

ह्वेल शार्क एक विलक्षण समुद्री मछली है। यह शार्क मछलियों में सबसे बड़ी होती है। सामान्यतया शार्क बड़ी उग्र और आक्रामक होती है तथा मानव तक पर बड़े खतरनाक ढंग से आक्रमण करती है किन्तु ह्वेल शार्क बड़ी सीधी और सरल होती है और किसी को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाती।

ह्वेल शार्क गर्म सागरों की मछली है। यह विश्व के प्राय: सभी उष्णकटिबन्धीय सागरों और महासागरों में पायी जाती है। कभी-कभी यह उत्तर में न्यूयॉर्क और दक्षिण में ब्राजील एवं ऑस्ट्रेलिया तक के सागरों में पहुँच जाती है। ह्वेल शार्क भारत के आस-पास के सागरों में पाई जाती है किन्तु यहाँ इसकी संख्या बहुत अधिक नहीं है। ह्वेल शार्क खुले सागरों में पानी की सतह के पास रहना पसन्द करती है। यह सागर में आराम से दो किलोमीटर प्रतिघंटा से लेकर चार किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से तैरती रहती है। ह्वेल शार्क का शरीर बहुत भारी होता है तथा इसके शरीर की संरचना इस प्रकार की नहीं होती कि यह सरलता से तैर सके किन्तु इसके गुर्दो में बहुत अधिक मात्रा में तेल होता है जिससे इसका शरीर पानी में हल्का हो जाता है और यह पानी में सरलता से तैरने योग्य हो जाती है। ह्वेल शार्क कभी-कभी तैरना बन्द कर देती है और पानी की सतह पर पड़ी धूप सेंकती रहती है केवल इसी समय इसे अच्छी तरह से देखा जा सकता है।

ह्वेल शार्क एक वास्तविक शार्क मछली है। इसकी शारीरिक संरचना शार्क के समान होती है। ह्वेल शार्क एक दैत्याकार मछली है। इसके शरीर की लम्बाई 15 मीटर से लेकर 19 मीटर तक होती है। कभी-कभी तो 21 मीटर तक लम्बी ह्वेल शार्क देखने को मिल जाती है। ह्वेल शार्क बहुत भारी होती है। इसके शरीर का वजन लगभग 70 टन होता है। ह्वेल शार्क के शरीर का रंग बड़ा विचित्र होता है। इसकी पीठ और शरीर के ऊपर के भाग का रंग ग्रे अथवा कत्थई होता है तथा पेट एवं शरीर के नीचे के भाग का रंग सफेद होता है। ह्वेल शार्क के सर और शरीर पर सफेद अथवा पीले रंग के धब्बे होते हैं तथा पीठ पर सफेद रंग की खड़ी-खड़ी रेखाएं होती हैं।

ह्वेल शार्क के शरीर के मीनपंख भी बड़े विचित्र होते हैं। इसके शरीर पर पीठ के दो मीनपंख होते हैं तथा दोनों सामान्य आकार के होते हैं। इसकी छाती के मीनपंख काफी बड़े होते हैं। इनका आकार हँसिये जैसा होता है। ह्वेल शार्क के नितम्ब पर केवल एक मीनपंख होता है।

ह्वेल शार्क का शरीर सामान्य शार्क मछलियों के समान लम्बा और बेलनाकार होता है तथा अन्य शार्कों के समान इसकी त्वचा बड़ी कठोर होती है। 15 मीटर लम्बी ह्वेल शार्क की त्वचा लगभग 15 सेंटीमीटर मोटी होती है। इसी से इसकी त्वचा की मोटाई का अनुमान लगाया जा सकता है। ह्वेल शार्क की पूँछ अधिक लम्बी नहीं होती किन्तु यह बड़ी मजबूत और शक्तिशाली होती है। ह्वेल शार्क के मुँह की संरचना सामान्य शार्क मछलियों से पूरी तरह भिन्न होती है। सामान्य शार्क मछलियों का मुँह इनके थूथुन के नीचे होता है जबकि ह्वेल शार्क का मुँह इसके थूथुन के अन्त में होता है। ह्वेल शार्क का सर बहुत चौड़ा

होता है एवं आँखें बहुत छोटी होती हैं। ह्वेल शार्क का मुँह बहुत बड़ा होता है। यह अपना मुँह 5 मीटर अथवा इससे भी अधिक फैला सकती है। ह्वेल शार्क के मुँह में छोटे-छोटे सैकड़ों दाँत होते हैं जो रेती जैसे दिखाई देते हैं।

ह्वेल शार्क का शरीर शार्क के समान होता है तथा यह ह्वेल के समान भोजन करती है। इसीलिए इसे ह्वेल शार्क कहते हैं। ह्वेल शार्क के मुँह में बास्किंग शार्क के समान गलफड़ा संकीर्णक होते हैं जो एक शानदार छन्नी का कार्य करते हैं। ये छोटे आकार की बलीन प्लेटों के समान दिखाई देते हैं। ह्वेल शार्क इन गलफड़ा संकीर्णकों की सहायता से प्लैकटन के छोटे-छोटे जीवों तथा मछलियों को छानती है। इसका प्रमुख भोजन प्लैकटन के जीव और छोटी-छोटी मछलियां हैं। ह्वेल शार्क सारडाइन और एन्कोवी जैसी झुण्ड बनाकर रहने वाली मछलियों को विशेष रूप से पसन्द करती है।

ह्वेल शार्क भोजन के लिए अपना विशाल मुँह फैला लेती है। इसका खुला हुआ मुँह एक छोटी सी गुफा जैसा दिखाई देता है। ह्वेल शार्क के मुँह से प्लैकटन और छोटी-छोटी मछलियों से युक्त पानी भीतर जाता है और गलफड़ों से पानी बाहर आ जाता है और प्लैकटन के जीव तथा छोटी-छोटी मछलियां गर्दन की दीवारों एवं गलफड़ा संकीर्णकों में फँस जाती है। इन्हें यह अपने पेट के भीतर पहुँचा देती है। ह्वेल शार्क के भोजन करने के ढंग से ऐसा लगता है कि इसके दाँत होते हैं किन्तु यह दाँतों वाली मछलियों के समान भोजन नहीं करती। ह्वेल शार्क के प्रत्येक जबड़े में 310 लाइनों में छोटे-छोटे अनगिनत दाँत होते हैं किन्तु यह एक समय में 10 से लेकर 15 लाइनों तक के दाँतों का उपयोग करती है।

ह्वेल शार्क सामान्तया धीरे-धीरे तैरते हुए मुँह खोलकर भोजन करती है किन्तु कभी-कभी यह भोजन करते समय पानी में सीधी लम्बवत् खड़ी हो जाती है। इस समय इसका सर सागर की सतह की ओर तथा पूँछ तल की ओर रहती है। लम्बवत् अवस्था में भोजन करने वाली ह्वेल देखने में बड़ी विचित्र लगती है किन्तु इस अवस्था में भी इसका भोजन करने का ढंग हमेशा की तरह सामान्य होता है।

दातौन ब्रुश से ज्यादा उपयोगी

बच्चों, स्वास्थ्य और मुख के सौन्दर्य के लिए दाँतों की सफाई अत्यन्त आवश्यक है। टूथपेस्ट तथा टूथ-पाउडर की अपेक्षा दातौन ज्यादा गुणकारी होता है। साथ ही दातौन से मसूढ़ों का व्यायाम भी होता है। यदि टूथ ब्रुश को दाँतों की सफाई में लम्बे समय तक प्रयोग करते रहें तो इससे दाँत भी कटने लगते हैं। इसीलिए दातौन का प्रयोग अति प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है। इससे अनेकों रोगों में दाँतों को लाभ भी मिलता है।

इसमें नीम, बबूल, करंज खैर, कीकर, अर्जुन, आम, कनेर के दातौन का विशेष महत्व है। दातौन ताजे, कीटाणु रहित तथा स्वच्छ होने चाहिएं। इन्हें एक दिन पूर्व पानी में भिगोकर रखना भी ठीक रहता हे। इसका एक किनारा करीब दो सेंटीमीटर लम्बा बार-बार दाँतों से घुमाते हुए नरम ब्रुश सा बना लेना ठीक रहता है ताकि दाँतों के बीच फंसे कण आसानी से निकल सकें। नीम के दातौन तो ऐंटीसेप्टिक का काम करता है। इससे दाँत मजबूत एवं चमकदार बनते हैं। साथ ही दाँतों के कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं तथा पायरिया एवं दन्तक्षय भी नहीं होता।

इसी तरह बबूल की दातौन भी मसूढ़ों को विशेष लाभ पहुँचाता है।

इस प्रकार हमें जहाँ तक हो सके ज्यादा से ज्यादा ब्रुश की तुलना में दातौन को ही उपयोग में लेने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

जानकारी : डॉ. रतिराम सिंह

समुद्र का जल नमकीन क्यों होता है?

वर्षा का जल भूमि पर गिरने से पूर्व वायुमण्डल में फैले कार्बन डाईऑक्साइड के सम्पर्क में आने के कारण कुछ अम्लीय हो जाता है। अम्ल पृथ्वी की चट्टानों का कटाव एवं भेदन करता है तथा इनके टूटे हुए हिस्सों को आयनों के रूप में अपने साथ बहाकर ले जाता है। आयन नहरों तथा नदियों के रास्ते समुद्र में चले जाते हैं। जबकि कई विघटित आयन जीवों द्वारा उपयोग किये जाते हैं तथा अन्य लम्बे समय के लिए छोड़ दिये जाते हैं। जहाँ समय के साथ-साथ इनकी मात्रा भी बढ़ती रहती है। समुद्री जल में क्लोराइड तथा सोडियम होता है जिससे समुद्र जल के विघटित आयनों का 90 प्रतिशत से अधिक की प्रतिपूर्ति हो जाती है। समुद्र के जल में कुल विघटित नमक का लगभग 3.5 है। इससे समुद्र का जल नमकीन होता है।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

अच्छी बातें

बात काम की सुन लो बच्चों,
कभी न करना तुम अभिमान।
अच्छे बच्चे जल्दी उठकर,
मात-पिता को करें प्रणाम।।

मिथ्या-भाषण कभी न करना,
बड़ों का करो सदा सम्मान।
जीवन के पथ पर चलना,
सच्चाई को लक्ष्य मान।।

कर्म-क्षेत्र में आगे बढ़ना,
सदा विनम्रता से रहना।
कोई बुराई छू न पाये,
अच्छी बातों का है कहना।।

कविता : कमलसिंह चौहान

पर्यावरण और बच्चे

महकते फूल चहकते बच्चे,
दिल के होते पूरे सच्चे।
भेद न कभी किसी से करते,
होते बेशक मन के कच्चे।।

प्रार्थना और इबादत पूंजी,
शाला में किलकारी गूंजी।
विद्या मंदिर इनसे सजते,
क्यारी के ये फूल हैं बच्चे।।

प्रेम के भूखे झूठ नहीं हैं,
दगाबाज के ठूंठ नहीं हैं।
हरियाली से खुशहाली है,
पर्यावरण पावन में पलते।।

प्रस्तुति : राधा नाचीज

पहेलियां

1. धन-दौलत से बड़ी है यह,
सब चीजों से ऊपर है यह।
जो पाए इसे पंडित बन जाए,
इसे बिन पाए मूर्ख रह जाए।।

2. धूप देख मैं आ जाऊँ,
छांव देख शरमा जाऊँ।
जब हवा करे स्पर्श मुझे,
मैं उसमें समा जाऊँ।।

3. लम्बी पूँछ पीठ पर रेखा,
दोनों हाथों खाते देखा।

4. आपस में ये मित्र बड़े हैं,
चार पड़े हैं चार खड़े हैं।
इच्छा हो तो उस पर बैठो,
या फिर बड़े मजे से लेटो।।

5. मुझे छूकर जो आँख मले,
उसे मैं रूला देती हूँ।
मुझे कोई मुँह लगाए,
उसे मैं मजा चखा देती हूँ।।

6. कातिल पर दोषी नहीं,
उजला उसका रंग।
बत्तीस के दल में रहे,
सदा रहे एक संग।।

7. हरी थी मन भरी थी,
लाखों मोती जड़ी थी।
राजा जी के बाग में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।।

8. अनगिन डाली पत्ता एक,
हुआ अचंभा उसको देख।
सिर पर सजे सलोना रूप,
न घबराए देख के धूप।।

9. एक नार वह दाँत दंतीली,
दुबली पतली छैल छबीली।
रोज सुबह से लागे भूख,
सूखे, हरे चबाए रूख।
क्यों री सखी, कहाँ वह पाऊँ,
आ री इधर तुझे समझाऊँ।।

10. एक जान देखी बेजान,
बोले है पर जान बेजुबान।
बीच बाजार करे व्यापार,
करे झूठ का बंटाधार।
घड़ी घड़ी फांसी पर लटके,
सच कहने में कभी न अटके

11. तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ खाने के काम।
मध्य कटे तो बन जाऊँ चाल,
मेरा नाम बताओ तत्काल।।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

अनोखा उपहार

बलतेज का जन्मदिन आ रहा था। वह अपने दोस्तों को निमंत्रण दे रहा था। इस बार ननिहाल से उसकी नानी जी, मामा जी और मामा जी का बेटा रंजन भी आ रहा था। बलतेज अटकलें लगा रहा था 'बिंटी ज्योमैट्री बॉक्स लायेगी। हरीश चॉकलेट का डिब्बा, मनदीप सेलों से बॉक्सिग करने वाला बॉक्सर लायेगा और सोनू ...?'

पिछले वर्ष भी उसके दोस्तों से उसे अपने जन्मदिन पर खूब उपहार मिले थे। एक जोकर था। एक उड़ने वाली परी और एक ...।

एक दिन किसी कारण बलतेज स्कूल नहीं आया। खेल के मैदान में घूम रहे दोस्तों में से किसी ने उसके आ रहे जन्मदिन की बात छेड़ी तो हर कोई उसे पिछले साल दिये अपने-अपने उपहार को याद करने लगा।

पारस कह रहा था, ''मैंने बलतेज को पिछले साल 'एयरगन' दी थी। वह सब उपहारों से महंगी थी। उस एयरगन का निशाना चूकता नहीं था। उस गन से बलतेज ने कई चिड़ियों और कबूतरों को शिकार बनाया था।''

हरीश कब पीछे रहने वाला था? वह बोला, ''मैंने उसे चाबी वाली बड़ी ट्रेन लाकर दी थी। छुक-छुक की आवाज निकालती इतनी तेज दौड़ती थी कि ...।''

''किसी भी स्टेशन पर नहीं रूकती थी।'' निर्मल ने व्यंग्य किया। सब हँस पड़े।

सुन्दर बोला, ''और मेरे चॉकलेट का डिब्बा वह कैसे भूल सकता है? पूरे डेढ़ सौ रुपये का आया था। उसने बोला था कि ऐसे चॉकलेट उसने पहले कभी नहीं खाये। वो कहता था कि चॉकलेट मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं।''

सुरेश बोला, ''मैं तो उसके लिए अपने जैसा एक मोटा तगड़ा पहलवान ले गया था। बड़ी देर तक उसके घर में ही सजा रहा ...।''

''क्योंकि उसके साथ कुश्ती करने वाला कोई नहीं था।'' अभितोज ने कहा। इस तरह दोस्तों में हँसी-ठठोली की बातें चल ही रही थीं कि अगले पीरियड की घंटी बज गई। सभी दोस्त कक्षा के कमरे की ओर भागे।

सोनू भी बलतेज का दोस्त था। उसे पुस्तकों से बहुत प्रेम था। जब उसे समय मिलता तो वह पुस्तकालय में आता और अपनी मनपसंद पुस्तकें पढ़ता रहता था। जब शनिवार का दिन आता तो वह पुस्तकालय से कोई न कोई पुस्तक जारी करवाकर ले आता और आराम से पढ़ता रहता। इस तरह वह रविवार की छुट्टी के दिन का सदुपयोग कर लेता था।

एक दिन छुट्टी के पश्चात् जब सोनू और बलतेज घर की ओर लौट रहे थे तो बलतेज ने सोनू से पूछा, ''मालूम है, अगले रविवार क्या है?''

सोनू ने झटपट जवाब दिया, ''तुम्हारे जन्मदिन के अलावा कुछ और हो तो बताओ।''

यह सुनकर बलतेज एकदम खुश हो गया और उसके कंधे पर हाथ मारता हुआ बोला, ''अरे कमाल है तुम्हें तो याद है मेरा जन्मदिन?''

सोनू ने उससे कहा, ''दोस्त का जन्मदिन हो और वह दिन भी याद न रहे तो दोस्ती का क्या फायदा?'' उसने यह भी बताया कि उसने घर में जो चार्ट बनाकर चिपकाया हुआ है उसमें बलतेज के नाम के सामने उसकी जन्मतिथि भी लिखी हुई है।

बलतेज खुश हो गया। उसने बताया कि इस बार उसके ननिहाल से नानी जी के साथ मामा जी और उनका लड़का रंजन भी आ रहे हैं। रंजन उसके लिए एयरगन लेकर आयेगा।

सोनू ने कहा कि यह उसने देखना है कि दोस्त को कौनसा उपहार देना है? खिलौने ही सब कुछ नहीं होते।

यह सुनकर बलतेज ने झट सवाल किया, ''इसका मतलब खिलौनों का कोई महत्व नहीं होता?''

''मैंने यह कब कहा? ठीक है, बचपन में हमें खिलौने बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन कुछ खिलौने हानिकारक भी तो होते हैं जिन्हें मैं बेकार की चीजें समझता हूँ। कुछ दिन के बाद कबाड़ बन जाते हैं।''

''क्या मतलब? कौन-से खिलौने हानिकारक होते हैं?''

''जैसे आपने एयरगन का नाम लिया है। जानते हो पिछले साल एयरगन चलाते समय उसकी गोली रानी की आँख में लगी थी तुझसे। इसलिए हमें जन्मदिन पर ऐसे उपहार देने चाहिए जिनका हमारी जिन्दगी में कोई खास महत्व हो। ऐसे उपहार जो हमें मुश्किलों से जूझना बतायें और अच्छे साथी बनकर हमारा मार्गदर्शन भी करें।''

जब बलतेज ने सोनू से पूछा कि वह उसके लिए कौन सा उपहार लेकर आ रहा है तो वह बोला कि यह तो मौके पर ही पता चलेगा।

आखिर बलतेज का जन्मदिन भी आ गया। नानी जी, मामा जी और रंजन भी आ चुके थे। बलतेज, रंजन और उसकी दीदी ने मिलकर घर को गुब्बारों और कागज के फूलों से खूब सजाया हुआ था। ज्यों-ज्यों शाम हो रही थी, त्यों-त्यों बलतेज के दोस्त घर आने शुरू हो गये थे।

पापा बेकरीवाले से केक ले आये थे। अब बलतेज के सभी दोस्त भांति-भांति के उपहार ला रहे थे जिनमें अधिकांश खिलौने ही थे। खिलौनों और पैकेट पकड़ता हुआ बलतेज बाग-बाग हो रहा था।

बलतेज के लगभग सभी दोस्त आ चुके थे लेकिन एक दोस्त अभी तक नहीं पहुँचा था। बलतेज उत्सुकतापूर्वक उस दोस्त की प्रतीक्षा कर रहा था। वह दोस्त था सोनू।

रमा ने गाना गाया। हेमा और नीतू ने नृत्य करके मन मोह लिया।

''चल भाई बलतेज, अब केक काटो। पांच बज चुके हैं।'' रंजन बोला।

कई और आवाजें आने लगीं। बिल्कुल उसी समय सोनू ने घर में प्रवेश किया। उसके हाथ में एक सुन्दर पैकेट था। बलतेज को जन्मदिन की बधाई देते हुए सोनू ने उसके हाथ में पैकेट थमा दिया।

''धन्यवाद सोनू! ये ...?'' बलतेज की बात अभी अधूरी ही थी कि सोनू एकदम बोल पड़ा, ''हाँ, बाल साहित्य की इन अच्छी पुस्तकों के अलावा मुझे कोई और उपहार नहीं मिला।''

''वाह! अब मुझे तुम्हारी उस दिन वाली बात समझ में आ गई है।'' बलतेज ने कहा और उसे गले लगा लिया। ज्योंही बलतेज ने केक काटा तो तालियों की गड़गड़ाहट में 'जन्मदिन मुबारक' की मिली-जुली आवाजें गूंजने लगीं।

मेज पर सजे उपहारों में सोनू का गिफ्ट पैक अलग ही नज़र आ रहा था।

लेख : दीपांशु जैन

रहस्यों के घेरे में मृत सागर

अपने नैसर्गिक गुणों के अभाव में प्रकृति की किसी भी रचना का अस्तित्व मरे हुए से ज्यादा नहीं रह पाता। लिहाजा एक अच्छा-खासा खूबसूरत समुद्र महज इसलिए 'मृत सागर' कहलाया कि उसमें कोई डूब नहीं सकता। विश्व प्रसिद्ध 'डेड सी' आजकल परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। उसके चारों ओर जहाँ कभी संरचनात्मक रूप से अनूठे पत्थरों और ऊँचे-ऊँचे टीलों का बोलबाला था, वहाँ अब पाँच सितारा होटलों और कॉफी केन्द्रों का जमघट नजर आने लगा है। यह वही समुद्र है जिसकी वैचित्रता को लेकर कितने ही मत-मतांतर पढ़ने को मिलते हैं। बाइबिल में विनष्ट हुए शहरों के इसमें डूबने की गाथाएं विस्तृत रूप से वर्णित हुई हैं। यहूदियों ने इसे 'लवण का समुद्र' नाम दिया। मृत सागर में मौजूद नमक का परिमाण लगभग चार करोड़ टन है।

मृत सागर की अद्भुत विशेषताओं को समझने के लिए बहुत से खोजकर्ता इसे पूरी तरह से देखने की कोशिश में ताउम्र जुटे रहे लेकिन यह कार्य दुर्भाग्यवश पूरा नहीं हो पाया। 1806 में शुरू की गई ऐसी ही खोजपरक यात्रा जर्मन वैज्ञानिकों सीट्जन व कोस्टीजन पर विपदा बनकर आई और भयंकर प्लेग के कारण वे समुद्र में ही समा गए। इससे पहले प्रयास के बाद अगले 50 वर्षों तक ब्रिटेन और अमेरिकी जहाजियों ने कोशिश जारी रखी। परन्तु इनमें अधिकतर उन स्थानीय नागरिकों द्वारा मार दिये गये जो मृत सागर को अंधभक्ति से देखते थे और उन्हें अपने पूजा-स्थल पर विदेशियों का घूमना गवारा नहीं था। अन्वेषणों की एक लम्बी श्रृंखला के बावजूद अभी तक विद्वान मृत सागर के जबरदस्त घनत्व के पीछे छिपे रहस्य की बखूबी व्याख्या नहीं कर पाए हैं फिर भी ब्रितानी खोजकर्ता 'स्टेनफील्ड' का यह विचार काफी हद तक सही समझा जाता है कि सम्भवतः सागर में नष्ट हुए शहरों और चट्टानों की बहुलता से सागर में घुलने के कारण इसकी लवण मात्रा बढ़ गई। 'डेड सी' के बारे में एक आश्चर्यजनक

तथ्य यह है कि इसके झरनों का पानी बहुत सी असाध्य व्याधियों का अचूक इलाज समझा जाता है।

अजीबो-गरीब विशेषताओं से सुशोभित इस समुद्र में आज भी डूबे हुए शहरों के भग्नावशेष दिखलाई पड़ते हैं। हकीकत में यहाँ कितने नगर धंसे हुए हैं। इस पर काफी मतभेद हैं। बाइबिल की पुस्तक 'जेनेसिस' में पाँच शहरों के खत्म होने की कथाएं लिखी गई हैं जबकि 'स्ट्राबोन' जैसे इतिहासकारों के अनुसार यह संख्या तेरह तक जाती है। इन विवादों से परे यह समुद्र अपना एक खास धार्मिक महत्व रखता है और वहाँ ईसाई धर्मावलम्बियों की भीड़ अक्सर दिखाई पड़ती है।

आज आप मृत सागर के तट पर ट्रेफिक रोशनियों और चमकती सड़कों का झिलमिलाता अक्स देख सकते हैं। जहाँ धार्मिक लोग अपनी श्रद्धा संजोए, रोगी अपना स्वास्थ्य लाभ लेते और घुमक्कड़ पर्यटक इसके जल पर मजे से अपना शरीर पसारे सूर्य स्नान करते हुए आपका स्वागत करने को तैयार होंगे।

चली, चली रे ठण्डी पवन...

पवन, समीर हवा के ही पर्याय हैं यूं हवा कुदरत का अनमोल तोहफा है, हवा के बिना जीवन सम्भव नहीं? हवा है तो दुनिया के नजारे हरे-भरे हैं। आखिर हवा कैसे बनती है? कैसे चलती है? आओ, यही कुछ जानते हैं।

दरअसल हवा जलवाष्प, धूल, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और कार्बनडाईआक्साइड के कणों का सम्मिश्रण है। यूं तो हवा हमें पेड़ों के माध्यम से भी प्राप्त होती है।

जब पृथ्वी पर कोई स्थान सूर्य के ताप से गर्म होने लगता है तो उस स्थान की वायु भी गर्म होने लगती है। तापमान के बढ़ने से उस स्थान की वायु फैलती है जिससे उसका घनत्व कम हो जाता है यानी हवा हल्की हो जाती है।

हल्की होने के कारण वह हवा वायुमण्डल में ऊपर उठने लगती है। इस कारण से उस क्षेत्र में वायु का दाब कम हो जाता है। वायु के इस दाब को संतुलित करने के लिए अधिक दबाव वाले ठण्डे स्थानों से भारी हवा इस स्थान की ओर बहने लगती है। इसे हवाओं का बहना कहते हैं। समुद्र के आसपास के स्थानों में दिन के समय सूर्य की गर्मी से जमीन गर्म हो जाती है और वायु हल्की होकर वायुमण्डल में ऊपर उठने लगती है। इस वायु का स्थान ग्रहण करने के लिए समुद्र के पानी की सतह से ठण्डी हवा जमीन की ओर बहने लगती है। रात के समय ठीक इसके विपरीत होता है। समुद्र के पानी की अपेक्षा जमीन ठण्डी हो जाती है और हवाएं जमीन से समुद्र की ओर चलने लगती हैं। हवाओं की गति पर पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। हाँ, कभी स्थिर और कभी लगातार बहने वाली तेज हवाओं से आँधी तूफान चक्रवात की सी स्थितियां बन जाती हैं।

हवा का विकराल रूप ही आँधी तूफान लेकर आते हैं। हवा ही पानी के बादलों को आकर्षित करती है। हवा हमारे जीने का अदृश्य अमृत भी है।

बाल कविता : रामअवध राम

सीखें

देशप्रेम भगत से सीखें,
श्रवण से पितृ भक्ति।
गुरुभक्ति एकलव्य से सीखें,
प्रह्लाद से ईश्वर भक्ति।।

आज्ञा पालन श्रीराम से सीखें,
अभिमन्यु से वीरता।
कर्ण से दान करना सीखें,
अर्जुन से सीखें एकाग्रता।।

न्याय विक्रमादित्य से सीखें,
भारत से सीखें प्रेम करना।
गंभीरता सागर से सीखें,
जल से सीखें एक रहना।।

चींटी से श्रम करना सीखें,
फूलों से सीखें हँसना।
ऊँचे उठना पर्वत से सीखें,
तरू की झुकी डाली से झुकना।।

बाल कविता : नदीम हसन

फुलवारी

प्यारी प्यारी मेरी फुलवारी,
चारों ओर फूलों की क्यारी।
इसकी शोभा अति न्यारी,
लगती सुगंध सभी को प्यारी।

कहीं गुलाब, कहीं चमेली,
झूल रही जूही अलबेली।
फुदक-फुदक आती चिड़िया,
भौरों के संग गाती चिड़िया।

लगी हुई चम्पा की लड़िया,
देख देख खुश होती मुनिया।
तितली झूमे मतवारी,
प्यारी प्यारी मेरी फुलवारी।

कहानी : कमल सौगानी

मूर्ति से प्रेरणा

एक था राजा। उसे तरह-तरह की मूर्तियों का निर्माण करवाने का बड़ा शौक था। उसके एक विशाल शाही महल में विश्व के शिल्पकारों द्वारा निर्मित कई मूर्तियों का अद्‌भुत संग्रह भी था।

एक दिन राजा ने अपने मुख्यमंत्री से कहा– हमारे पास कई तरह की मूर्तियां हैं। लेकिन अब हम चाहते हैं कोई शिल्पकार ऐसी मूर्ति का निर्माण करे, जो देखने वालों को कुछ प्रेरणा भी दे।

मुख्यमंत्री ने कहा– ठीक है, कल ही मैं राजधानी में यह ऐलान करवा देता हूँ कि जो शिल्पकार प्रेरणायुक्त मूर्ति बनायेगा, उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं ईनाम में मिलेंगी।

प्रेरणायुक्त मूर्ति के निर्माण पर इतना बड़ा ईनाम देखकर कई शिल्पकारों ने सोचा– आखिर वह कौनसी मूर्ति बनाई जाए, जिस पर ईनाम मिल सके।

फिर एक निश्चित दिन, एक विशाल मैदान में एक दर्जन से अधिक शिल्पकार एकत्रित हुए। सभी अपनी-अपनी कल्पना से मूर्तियों का निर्माण करने लगे।

तकरीबन तीन हफ्ते उपरान्त सभी शिल्पकारों ने अपनी-अपनी मूर्तियां पूर्ण कर लीं।

फिर राजा और मुख्यमंत्री ने एक-एक कर मूर्तियों को देखना शुरू किया। दोनों ने लगभग ग्यारह मूर्तियां देखीं। हर मूर्ति अपने आप में सुन्दर और मुँह बोलती थी। लेकिन उनसे प्रेरणायुक्त कोई बात नहीं झलक रही थी।

अन्त में दोनों बारहवें नम्बर की मूर्ति के पास पहुँचे। उस मूर्ति के सिर के अगले हिस्से पर

बड़े-बड़े बाल लटक रहे थे। लेकिन पिछले हिस्से से वह इतनी गंजी बनी थी कि अंगुलियां फिसल जाती। सिर की इस अनोखी बनावट ने मूर्ति की खूबसूरती में एक तरह से कमी कर दी थी।

मूर्ति को देखकर आसपास खड़े दरबा. री एक-दूसरे से चर्चा करते हुए कह रहे थे– शिल्पकार ने अपनी बुद्धिमानी से ही इसकी खूबसूरती को कम किया है।

अन्त में जब राजा से रहा न गया तो उसने मूर्ति की इस अजीब बनावट का कारण उस शिल्पकार से जानना चाहा।

शिल्पकार बोला– महाराज! यह समय की मूर्ति है।

राजा ने चकित होकर पूछा– भला, यह समय की मूर्ति कैसे है?

–हाँ, महाराज! समय की। –शिल्पकार ने कहा– यदि आप इसे आगे से पकड़ना चाहो तो आसानी से पकड़ सकते हो। अगर समय को पीछे से पकड़ने का प्रयास करोगे तो इसे कभी नहीं पकड़ पाओगे।

राजा ने मुख्यमंत्री की तरफ देखते हुए कहा– 'मैं समझा नहीं, आखिर यह शिल्पकार कहना क्या चाहता है?'

अब शिल्पकार ने समझाते हुए कहा– ठीक यही हालत समय की है। इस मूर्ति की तरह, समय को भी आगे से ही रोका जा सकता है। समय के गुजर जाने के उपरान्त अगर कोई अवसर तलाशना चाहे तो उसे भी मुँह की ही खानी पड़ती है।

यह सुनकर राजा को बोध हुआ। 'दरअसल यह सच्ची प्रेरणायुक्त आधुनिक मूर्ति है।'

फिर राजा ने शिल्पकार को गले लगाते हुए कहा– जैसी मूर्ति मैं चाह रहा था वैसी ही तुमने बनाकर मेरी हकीकत में सच्चाई का रंग भरा है, तुम पुरस्कार के योग्य हो।

राजा ने वायदे के मुताबिक शिल्पकार को एक हजार स्वर्ण मुद्राओं का पुरस्कार दिया और उस मूर्ति को अपनी शाही बैठक के समक्ष प्रतिष्ठित करवाया ताकि दर्शकों को मूर्ति से सदा नसीहत मिलती रहे।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन

– विकास कुमार

बच्चों, गुरुत्वाकर्षण बल की खोज आइज़क न्यूटन ने की थी।
मैडम वो कैसे?
अभी बताती हूँ बच्चों!
एक दिन वैज्ञानिक आइज़क न्यूटन एक सेब के पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे कि तभी एक सेब उनके सिर पर आ गिरा।
अरे ये क्या! पूरा मज़ा खराब कर दिया।

परन्तु अचानक एक ख़्याल ने उनके दिमाग में हलचल मचा दी कि ये सेब आखिर नीचे ही क्यों गिरा ऊपर क्यों नहीं गया?
अरे बच्चों शोर मत करो।
अरे हाँ, मैडम! ये तो हमने कभी सोचा ही नहीं। वाह! क्या बात है।
इस बात से वह इतने परेशान थे कि उन्होंने विज्ञान से इस बात का उत्तर खोजना शुरू कर दिया।

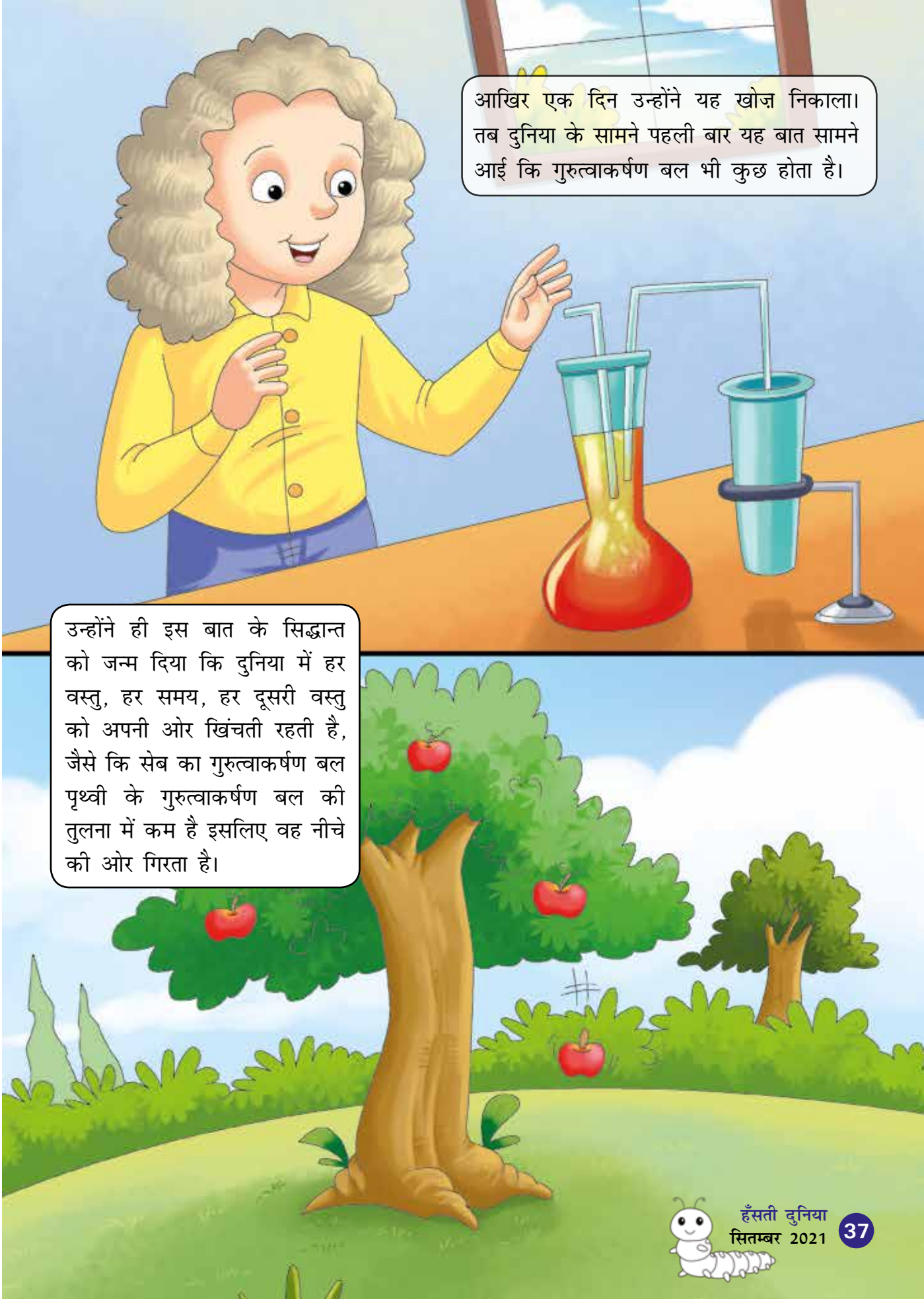
आखिर एक दिन उन्होंने यह खोज़ निकाला। तब दुनिया के सामने पहली बार यह बात सामने आई कि गुरुत्वाकर्षण बल भी कुछ होता है।
उन्होंने ही इस बात के सिद्धान्त को जन्म दिया कि दुनिया में हर वस्तु, हर समय, हर दूसरी वस्तु को अपनी ओर खिंचती रहती है, जैसे कि सेब का गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल की तुलना में कम है इसलिए वह नीचे की ओर गिरता है।

– संकलन : विद्या प्रकाश

क्या आप जानते हैं?

- समुद्र या नदी के आस-पास विचरण करने वाले राजहंस (व्हूपिंग क्रेन) एक ऐसा पक्षी है जिसकी आवाज तीन मील दूर तक सुनी जा सकती है।
- हाथी की सूंड में एक भी हड्डी नहीं होती। उसकी सूंड में केवल मांसपेशियां होती हैं।
- कोबरा सांप के एक ग्राम जहर से 150 व्यक्तियों की मौत हो सकती है।
- टारपीडो नामक मछली के स्पर्श मात्र से 40 से 2000 वोल्ट का झटका लगता है।
- केंचुआ अपने वजन से दस गुना अधिक वजन खींच सकता है।
- अफ्रीका में पाया जाने वाला मैड्रक एक ऐसा पौधा है जिसकी शक्ल मनुष्य से मिलती-जुलती है और उसे उखाड़ने पर बच्चे के रोने जैसी आवाज आती है।
- मच्छर अपने वजन से तीन गुना अधिक खून पी सकता है।
- पेरु में एक ऐसा पेड़ है जिससे 20 गैलेन पानी टपकता है।
- केले के पेड़ में लकड़ी नहीं होती तथा तने में चिकनी रेशेदार जलयुक्त परत पाई जाती है।
- कुछ पेड़ ऐसे भी होते हैं जो अपने आप ही वर्षा करते, आग उगलते और धुआं निकालते हैं।
- सैपोडिल्ला नामक पेड़ के रस को जमाकर च्यूंगम बनाया जाता है।
- स्ट्राबेरी एक ऐसा फल है जिसके बीज बाहर होते हैं।
- भारत के अलावा दक्षिण कोरिया में भी 15 अगस्त को ही अपना स्वतन्त्रता दिवस मनाता है।
- महात्मा गाँधी जी को सर्वप्रथम 'रविन्द्रनाथ टैगोर जी' ने महात्मा कहा था।
- सूर्य का प्रकाश जल के भीतर अधिकतम 400 मीटर की गहराई तक जा सकता है।
- विश्व का सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथ ऋग्वेद है।
- भारत में सर्वप्रथम रेडियो प्रसारण 23 जुलाई, 1927 को मुंबई से हुआ था।
- सबसे तेज गति से बढ़ने वाला वृक्ष 'बांस' है।
- नार्वे देश में रात को 12 बजे कुछ समय के लिय सूर्य उदय होता है।
- सोना सबसे लचीली धातु है।
- चन्द्रग्रहण साल में अधिकतम 3 बार हो सकता है।
- पूर्ण सूर्यग्रहण अधिकतम 7 मिनट का होता है।
- साँप बूढ़ा होने पर भी बढ़ता रहता है।
- स्विट्जरलैंड देश ने किसी भी युद्ध में भाग नहीं लिया है।
- कान सुनने के अलावा शारीरिक सन्तुलन बनाए रखने का भी कार्य करता है।
- नील नदी का पानी गर्म होता है।
- मकड़ी बिना कुछ खाए पिए लगभग 10 वर्ष तक जीवित रह सकती है।
- थाईलैंड में सफेद हाथी पाए जाते हैं।

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

श्रम के फूल

श्रम की महिमा अमित-अपार।
श्रम ही है सुख का आधार।

जो मुँह श्रम से लेता मोड़।
उसको सब जन देते छोड़।

बिना परिश्रम सब सुख-भोग।
बन जाते हैं जीवन-रोग।

श्रम देता है शुभ परिणाम।
श्रम ही सभी सुखों का धाम।

जो भी जन होते श्रमहीन।
उनका जीवन दुखमय-दीन।

श्रम का है आलस से वैर।
श्रम से सकते सागर-तैर।

जो मिलता है श्रम के बाद।
उसका होता बड़ा स्वाद।

चाहे कोई भी हो कर्म।
श्रम बन जाता सबका धर्म।

शुभ कर्मों में ही श्रम धर्म।
धर्म बिना श्रम है अपकर्म।

जब जन करते हैं 'श्रमदान'।
वह होता कर्तव्य महान।

जहाँ न खिलते श्रम के फूल।
वह जीवन बन जाता धूल।

बाल कहानी : अमर सिंह शौल

कोयल और कौवा

कौवा जहाँ भी पेड़ पर बैठता लोग उसे पत्थर मारकर भगा देते। ऐसे उसकी तरफ किसी का खास ध्यान नहीं जाता परन्तु जब वह अपनी कांव-कांव की कर्कश आवाज निकालता तो समझो उसकी शामत आ गई।

'कोयल भी तो उसकी तरह काली है परन्तु लोग उसे क्यों पत्थर नहीं मारते? मुझे ही क्यों पत्थर मारते हैं?' ये बात कौवे की समझ में नहीं आ रही थी। एक दिन वह कोयल से पूछ बैठा– ''कोयल ओ कोयल।'' मेरी समझ में एक बात नहीं आती। लोग मुझे देखते ही पत्थर मारना शुरू कर देते हैं, पर तुझे लोग पत्थर क्यों नहीं मारते? तेरे में ऐसी कौन-सी खासियत है? आखिर तू भी तो मेरी तरह काली ठहरी।

''तुम खुद ही समझ लो। मैं क्या बताऊँ?'' कोयल ने कहा।

''खुद क्या समझना है? मुझे पता होता तो तुझसे क्यों पूछता?''

''ये तो सिर्फ वाणी का फर्क है। लोग मेरी मीठी आवाज की वजह से मुझे पसन्द करते हैं।'' कोयल ने बताया।

''ये मुझे पहले ही पता था कि तुम अपने मुँह से 'मिट्ठू मियां' वाली बात जरूर करोगी। मैं तुम्हारी बात हरगिज नहीं मान सकता। तेरा मेरा रंग एक जैसा है। फिर मैं कैसे मान लूं क्या तू मुझे बुद्धू समझती हो?'' कौवे ने चिढ़ते हुए कहा।

''मैं सच कह रही हूँ। मानो या न मानो ये तुम्हारी मर्जी।'' कोयल बोली।

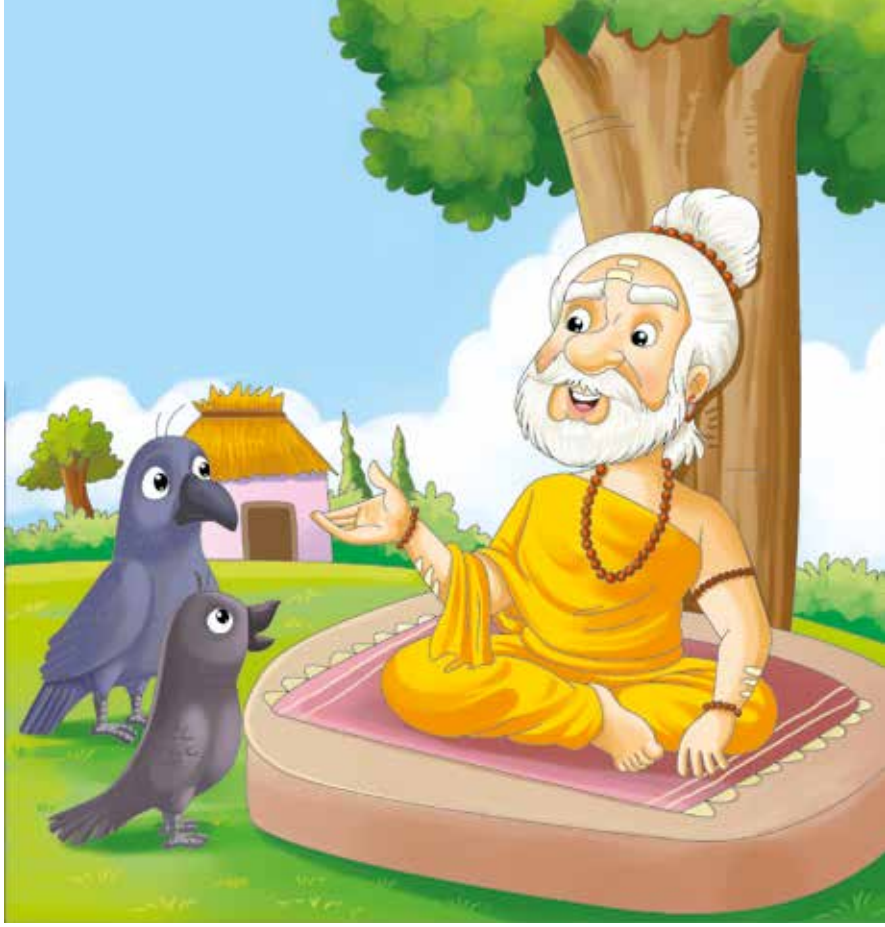

पेड़ पर बैठी कोयल अपनी मस्ती में कूक रही थी कुहू-कुहू। ठीक उसके सामने वाले पेड़ पर कौवा बैठा हुआ था। कोयल की कुहू-कुहू की आवाज सुनते ही उसके तन मन में आग लग गई। अच्छा अपने आपको बहुत सुरीली आवाज वाली समझती है। उसने भी अपनी कर्कश आवाज में कांव-कांव का गाना शुरू कर दिया। तभी पेड़ के नीचे से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने पत्थर उठाकर कौवे की तरफ दे मारा। कौवा उड़ गया। कौवे को इस पर बहुत गुस्सा आ रहा था। कोयल इनकी इतनी लाडली बन गई और मैं इनका दुश्मन। ऐसा क्यों? क्यों न मैं इसका पता किसी ज्ञानीजन से करूँ?

''मैं रोज-रोज आदमी से बेमतलब पत्थर खाते-खाते परेशान हो गया। चलो आज किसी सन्त-महात्मा के पास चलते हैं।'' कौवा कोयल से बोला।

''ठीक है जैसी तुम्हारी इच्छा। मैं जाने के लिए तैयार हूँ। कोयल ने कहा।

दोनों महात्मा के पास पहुँचे। दोनों ने महात्मा को प्रणाम किया।

''आओ आओ कैसे आना हुआ?'' महात्मा ने पूछा।

''महाराज मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ।'' कौवा बोला।

''पूछो वत्स क्या पूछना चाहते हो?''

''लोग देखते ही मुझे पत्थर क्यों मारना शुरू कर देते हैं? कोयल को देखकर क्यों नहीं? जबकि हम दोनों का रंग एक जैसा ही है।''

''इसका कारण जानना चाहते हो वत्स?''

''हाँ महाराज।''

''सुनो कोयल की मधुर वाणी की वजह से इसे सब प्यार करते हैं और तुम्हारी कर्कश आवाज की वजह से लोग तुम्हें पत्थर मारते हैं।''

''महाराज आप ये क्या कह रहे हैं?'' कौवे ने हैरानगी से महात्मा की तरफ देखते हुए कहा।

''हाँ वत्स यह सत्य है सिर्फ वाणी का फर्क है। रंग से कुछ नहीं होता। मधुर वाणी से सबका दिल जीता जा सकता है। महात्मा ने उसे समझाते हुए कहा।

कौवे को अब बात समझ आ चुकी थी।

जानकारी : कैलाश जैन

अनुशासित चींटियों का एक दल

अफ्रीका के जंगलों में चींटियों की एक विशेष प्रजाति पायी जाती है। ये चींटियां लाखों-करोड़ों की संख्या में समूह बनाकर रहती हैं। इन चींटियों के सम्बन्ध में गहन वैज्ञानिक अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, वे अत्यन्त रोचक तथा चौंकाने वाले हैं। इन चींटियों की अपनी एक सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था है, जिनमें मजदूर, इंजीनियर, अंगरक्षक, भोजन सामग्री ढोने वाली चींटियां आदि कई वर्ग हैं। चींटियों का प्रमुख 'रानी चींटी' होती है जो मात्र अंडे देने का कार्य करती है। अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले पशु और मनुष्य इन चींटियों से ही सबसे अधिक खौफ खाते हैं। जंगलों में चरते हुए पशुओं को ये चींटियां करोड़ों की तादाद में आकर चारों तरफ से घेर लेती हैं और आधे घंटे से भी कम समय में घोड़े और बैल जैसे जानवर को खत्म कर देती हैं। घटना स्थल पर पशु की मात्र हड्डियां पड़ी मिलती हैं। यह चींटी-दल इतने गुपचुप और सुनियोजित तरीके से हमला करता है कि शिकार को बचने या भाग निकलने का कोई अवसर ही नहीं मिल पाता।

वैसे तो ये चींटियां अंधी होती हैं किन्तु अपने सिर पर लम्बे दो मोटे तनों, जिन्हें एंटीना कहा जाता है, के द्वारा अपने आसपास की जानकारी निरंतर प्राप्त करती रहती हैं। इनमें सूंघने की विलक्षण शक्ति होती है। जब चींटी-दल अपने अभियान पर जा रहा होता है तो आगे की पंक्ति की चींटियां एक विशेष प्रकार का अम्ल अपने पीछे छोड़ती चलती हैं।

इस अम्ल की गंध से पीछे आ रही चींटियां अपना रास्ता निर्धारित करती हैं।

अभियान के दौरान रास्ते में यदि कोई पानी का नाला या नदी आ जाये तो इंजीनियर चींटियां एक-दूसरे के पैरों में पैर फंसाकर पुल बना देती हैं, जिस पर पूरा चींटी-दल होकर गुजर जाता है और उसके बाद चींटियों का यह पुल सिमटने लगता है और दूसरे किनारे पर पहुँच जाता है। गर्मी और धूप के दौरान इंजीनियर चींटियां रास्ते पर एक मिट्टी की खोखली परत बिछा देती हैं जिसके नीचे पूरा चींटी-दल आराम से अपना रास्ता पार करता है।

इन चींटियों में अंगरक्षक चींटियां हमेशा प्रमुख रानी चींटी को घेरकर चलती हैं। चींटी-दल का अपना कोई घर नहीं होता। घूमते हुए खाते रहना ही इनका काम है। ये रात में नहीं चलतीं। रात्रि विश्राम के सयम ये रानी चींटी के चारों ओर एक

गोल घेरा बना लेती हैं। सुबह होते ही पुनः अपने अभियान पर निकल पड़ती हैं। सोलह दिन तक लगातार घूमते रहने के बाद सतरहवें दिन यह चींटी-दल अपना शिविर लगाता है क्योंकि सोलह दिन की अवधि के बाद रानी चींटी को अंडे देने होते हैं।

शिविर निर्माण में मजदूर चींटियां विशेष भूमिका अदा करती हैं। ये किसी विशाल वृक्ष पर चढ़कर एक-दूसरे की कमर में पैर फंसाकर इस प्रकार घेरा बना लेती हैं कि वह अन्य चींटियों के लिए कोठरियों का काम करें। इसके बाद रानी चींटी सबसे अधिक सुविधाजनक कोठरी में अंडे देती है जो कम से कम एक हजार होते हैं। अंडे देने के बाद अन्य चींटियां उन अंडों को सेवा गृह तक लाती हैं जहाँ अंडों के चारों तरफ रेशम-सा मुलायम कोया बुन देती हैं। करीब पंद्रह दिन बाद उन अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। बच्चों की पर्याप्त देखभाल की जाती है। इस सारी प्रक्रिया के बाद चींटी-दल पुनः अपनी यात्रा पर रवाना हो जाता है।

पूर्ण अनुशासित और नियमित दिनचर्या के माध्यम से यह चींटी-दल निरंतर यात्राएं करता रहता है। इनकी भयानकता और अनुशासनप्रियता के कारण इन्हें 'सैनिक चींटी' के नाम से भी जाना जाता है।

पहेलियों के उत्तर :

1. विद्या 2. पसीना 3. गिलहरी,
4. चारपाई 5. मिच 6. दाँत,
7. भुट्टा 8. छाता 9. आरी,
10. तराजू 11. चावल

शिक्षक की भूमिका

एक बार पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अपने सहयोगी सृजनपाल सिंह से कहा, ''यह बताओ कि अपने आपको कैसे याद किया जाना चाहते हो?''

सृजनपाल ने जवाब दिया, ''सर, जीवन में अभी सर्वोत्तम किया जाना शेष है, मेरी कोई उप. लब्धि ही नहीं, मैं क्या जवाब दूं?''

डॉ. कलाम बोले, ''यह बताओ, तुम अपनी उपलब्धियों के लिये याद किये जाना चाहते हो या अपने कार्य के माध्यम से?''

सृजनपाल ने कहा, ''दोनों से ही सर। सर, आप बताईये न, आप स्वयं को किस बात के लिये याद किये जाना चाहते हैं? राष्ट्रपति, वैज्ञानिक, लेखक या मिसाइलमैन?''

अपने प्रश्न के बाद सृजनपाल डॉ. कलाम की ओर देख ही रहे थे कि वे बोले, ''मैं तो चाहूँगा कि लोग मुझे एक शिक्षक के रूप में याद रखें। एक शिक्षक ही ऐसा व्यक्ति होता है जो बच्चे को तराशकर उसे जीवन में कामयाब बनाता है। इसलिये मैं प्रयास करूंगा कि लोग मुझे शिक्षक के रूप में ही जानें।''

यह सुनकर सृजनपाल सिंह, डॉ. कलाम के आगे नतमस्तक हो गये और बोले, ''सर, आप मेरे भी शिक्षक हैं। मैं आजीवन आपकी इन बातों को याद रखूंगा।''

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा

पढ़ो और हँसो

तीन व्यक्तियों को कहीं से तीन बम मिल गये। एक व्यक्ति बोला– चलो इन्हें पुलिस को दे दें। दूसरा बोला– हाँ-हाँ ठीक है लेकिन रास्ते में एक फट गया तो?

तीसरा बोला– तो कह देंगे कि दो ही मिले थे।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

अधिकारी : (अपने असिस्टेंट से) समझ में नहीं आता, जब बुद्धि बंट रही थी उस समय तुम कहाँ थे?

असिस्टेंट : साहब! उस समय में आपके साथ दौरे पर था।

टीचर : (पुस्तक खोलते हुए) कल्पना बताओ, मैं कल कहाँ पढ़ा रहा था?

कल्पना : सर, आप कल इसी कक्षा में ही तो पढ़ा रहे थे।

पंडित जी हवन कराते समय एक चम्मच घी आग में और एक चम्मच घी अपनी शीशी में डालते जा रहे थे। पास बैठा एक बच्चा चिल्लाकर बोला– घृतम् चोरम्, घृतम् चोरम्।

पंडित जी बच्चे को चुप कराते हुए बोले– पुत्र न कर शोरम्, न कर शोरम्। आधा तोरम् आधा मोरम्।

– महन्थ राजपाल (जौनपुर)

मकान मालिक : तुम्हारी ओर पिछले छह महीने का किराया बकाया है और तुम केवल एक महीने का किराया ही दे रहे हो?

किरायेदार : अगर पिछले दरवाजे की चौखट तोड़कर न बेचता तो यह भी न मिलते।

एक यात्री ने बड़े तेज स्वर में रेलवे स्टेशन मास्टर से शिकायत की– चार घंटे हो गये हैं, गाड़ी अभी तक नहीं पहुँची।

स्टेशन मास्टर बोला– घबराइए नहीं, यही टिकट चौबीस घंटे तक चल सकता है।

नेता : (भाषण देते हुए) हम इस देश के लिए अपनी जान भी दे देंगे।

एक व्यक्ति उठकर बोला– आप महंगाई के विरुद्ध क्यों नहीं लड़ते?

नेता जी : मुझे लड़ाई से बहुत डर लगता है।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

बच्चा : दादा जी, आपके सर के बाल सफेद और आपकी मूछों के बाल काले क्यों हैं?

दादा जी : क्योंकि मेरी मूछों के बाल मेरे सर के बालों से बीस साल छोटे हैं।

बस कंडक्टर : केवल 12 वर्ष से कम के बच्चे ही आधे टिकट पर यात्रा कर सकते हैं।

एक लड़का : मैं 11 वर्ष, 11 महीने और 29 दिन का हूँ।

बस कंडक्टर : तुम्हारा 12वां वर्ष कब पूरा होगा?

लड़का : जब मैं बस से उतरूँगा तब।

– ममता शुक्ला (खलीलाबाद)

सेठ साहब : (नौकर से) श्यामू जरा यह बिजली का तार पकड़ना।

नौकर : (झटका लगने के बाद) मालिक इसमें तो करंट है।

सेठ साहब : ठीक है श्यामू मैंने यही मालूम करना था।

राजू : रमेश क्या तुम्हारा दांत अभी भी दर्द कर रहा है?

रमेश: पता नहीं वह तो डॉक्टर के पास है।

सोहन : (मोहन से) यार, मुझे कल तक सौ रुपये उधार दे दो।

मोहन : नहीं, मैं रुपये उधार नहीं देता हूँ।

सोहन : तो फिर नगद ही दे दो।

एक आदमी अपने साथी से बोला– मैंने अपने पहले लड़के का नाम 'अंतरंजन' रखा है और दूसरे का नाम 'संतरंजन' रखा है। अब तीसरे का क्या रखें?

–तुम तीसरे का नाम 'दंतमंजन' रख दो।– उसके साथी ने सलाह दी।

– संजय बिल्दानी (बड़नेरा)

एक ड्राइवर को तेज रफ्तार से बस चलाते देख ट्रैफिक पुलिस मैन ने रोका और डायरी निकालकर ड्राइवर से पूछा– आपका नाम?

ड्राइवर : मेरा नाम है– कपालामात चंद्रा तसकल कातरजीमयू नाकु दा ....

पुलिस मैन ने बीच में ही टोकते हुए कहा– बस-बस आगे जाओ, आइंदा इतनी तेज गाड़ी मत चलाना।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

एक आदमी रेल डिब्बे में एक संदूक को ऊपर वाले बर्थ पर रखने लगा तो नीचे बैठी महिला बोली– इसको किसी और जगह रखो कहीं यह मेरे सिर पर न आ गिरे।

वह आदमी बोला– चिन्ता की कोई बात नहीं। इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं है।

एक उम्मीदवार ने परिचित वोटर के घर जाकर कहा– भैया जरा ख्याल रखना, मैं खड़ा हूँ।

वोटर ने एक खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा– आप खड़े क्यों हैं, बैठिये न।

शिक्षक : पप्पू बताओ, अकाल और बाढ़ में क्या अंतर है?

पप्पू : सर, अकाल में नेता मोटर और जीपों में घूमते हैं और बाढ़ में हैलीकॉप्टर में घूमते हैं।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन

भारत में पहली बार शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 1962 को मनाया गया। हुआ यूं कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के छात्र उनके जन्मदिन को एक समारोहपूर्वक मनाना चाहते थे। तब राधाकृष्णन ने कहा कि इस दिन को मेरे अकेले के जन्मदिन के तौर पर मनाने के बजाय अगर तुम इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। तभी पूरे देश में 5 सितम्बर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

डॉ. राधाकृष्णन केवल शिक्षक ही नहीं थे बल्कि वे यूनेस्को और मास्को में भारत के राजदूत भी बने। आगे चलकर वे देश के पहले उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति बने। सन् 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वर्ष 1961 में जर्मन 'बुक ट्रेड' ने उन्हें शांति पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन बड़े ही मानवीय और दयालु थे। राष्ट्रपति भवन में उनसे मिलने कभी भी कोई भी आ सकता था। उस समय उनका वेतन दस हजार रुपये था। लेकिन वे उसमें से केवल 2500 रुपये ही स्वीकार करते थे। बाकी का वेतन वे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में दान दे देते थे। 17 जुलाई, 1975 को उनका स्वर्गवास हो गया।

हिन्दी की जीत

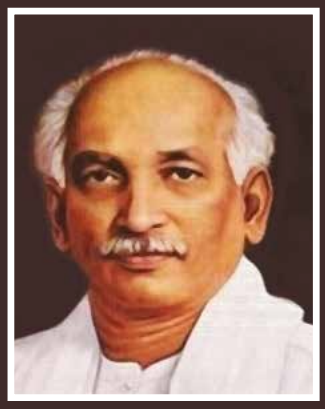

प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता और कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. पट्टाभि सीता रमैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में ही पता लिखते थे। इस कारण से दक्षिण के डाकखाने वालों को बड़ी असुविधा होती थी। उन सबने उनको कहला भेजा कि आप अंग्रेजी में पता लिखा करें ताकि डाक बांटने में आसानी हो।

डॉ. सीता रमैया ने उनसे कहा– भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। अत: मैं अपने पत्र व्यवहार में उसी का प्रयोग करूंगा।

डाकखाने वालों ने उनको धमकी दी– ''यदि आप अपनी हरकतों से बाज नहीं आए तो हम आपकी सारी चिट्ठियां 'डेड लैटर' ऑफिस को भेज देंगे।''

डॉ. सीता रमैया पर इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ। दोनों के बीच अर्से तक शीतयुद्ध जारी रहा। अन्त में डाकखाने वाले झुक ही गए। मजबूरन उन्हें मछलीपट्टणम के डाकखाने में एक हिन्दी जानने वाले आदमी को रखना पड़ा। इस तरह जीत हिन्दी की हुई।

हिन्दी दिवस पर विशेष : दीपक कुमार 'दीप'

हिन्दी से है हिन्दुस्तान

हिन्दी हिन्द की आन है
गर्व हमें है हिन्दी पर,
है भाषा ये सरल बड़ी
इसकी अलग पहचान है।

हिन्दी, हिन्द का गहना है
इसे सजायें और संवारे,
दुनिया के कोने-कोने में
आओ इसको और निखारें।

हिन्दी से हैं हम और
हिन्दी से है हिन्दुस्तान,
हिन्दी मेरी हिम्मत है
इस पर वारूं तन मन प्राण।

ज्ञान हो हर भाषा का
ये उत्तम बात है,
पर मातृभाषा को पीछे रखना
ये विश्वासघात है।

हिन्दीवासी हिन्दी अपनायें
हिन्दी हो हर घर-घर में,
उन्नत होगा भारत 'दीप'
जीवन के हर सफर में।

बाल कविता : डॉ. सेवा नन्दवाल

हिन्दी एक गुलशन

हिन्दी एक महकता गुलशन,
प्रादेशिक भाषाएं फूल।
कोई किसी की नहीं दुश्मन,
वैर-भाव होता फिजूल।।

सबका अपना महत्व है,
क्यों कहें हम ऊल-जलूल।
अंग्रेजी विदेशी सही,
पर उपयोगी यह न भूल।।

सब मिल-जुल रहें प्रेम से,
कोई किसी का बने ना शूल।
सब भाषाएं उसी से निकलीं,
संस्कृत तो है सबका मूल।।

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **निशिका मनवानी** — 11 वर्ष
   44, ग्रीन पार्क सोसाइटी,
   अंकलेश्वर महादेव रोड,
   गोधरा (गुजरात)

2. **रिद्धम छाबड़ा** — 10 वर्ष
   अशोका एन्क्लेव,
   फरीदाबाद (हरियाणा)

3. **डिम्पल कुमारी** — 12 वर्ष
   ग्रीन पार्क सोसाइटी,
   अंकलेश्वर महादेव रोड,
   गोधरा (गुजरात)

4. **नवदीश गुजराल** — 9 वर्ष
   302बी, सेंट्रल टाउन,
   पखोवाल रोड, लुधियाना (पंजाब)

5. **लहर मूलचंदानी** — 10 वर्ष
   34/35, योगेश्वर सोसाइटी,
   आनंद नगर, गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं-

अजय कुमार (नेठवा, चुरू),
अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर),
मानव (अवतार इन्क्लेव, दिल्ली),
जिया (रानी बाग, दिल्ली),
खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर),
समदृष्टि (रोहिणी, दिल्ली),
अरुण पंजवानी (धनपुरी),
पूनम (जनरल गंज, कानपुर),
अभिजीत, अलका (बंशीपुर, चन्दौली),
सुरिन्दर (सेंट्रल टॉउन, लुधियाना),
लवलीन, निहारिका (मोहाली),
गर्विता (विकास नगर, भिवानी),
काश्वी (डाबड़ा चौक, हिसार),
हर्षिता (जलालाबाद, फाजिल्का),
यूवान (मीरा कॉलोनी, संगरिया),
श्रेष्ठा (कंचनपुरी कॉलोनी, लखीमपुर खीरी),
कुश, कृष्णा, चिराग, कृष्णा समनानी, मयूर, आरती, हार्दिक, सुमित (गोधरा)।

'सितम्बर अंक' रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 15 अक्टूबर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

★ पांच सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

★ चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

★ 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

✽ संकलन : जगतार चमन

कभी न भूलो

❖ जो बालक परिश्रम करते हैं, वे सदा सफल होते हैं। इस बात को याद रखो, जब तक तुम कठिन परिश्रम करना नहीं सीखते तब तक तुम्हें सफलता की आशा नहीं करनी चाहिए। सफलता के लिए दृढ़-निश्चय और कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है।

– सूक्ति

❖ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। **– अल्बर्ट आइंस्टीन**

❖ निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए।

– आचार्य विरेन्द्र देव

❖ अधिक धन होने पर भी जो चिन्तित है वह सबसे बड़ा निर्धन है। कम धन रहने पर भी जो सन्तुष्ट रहता है वही सबसे बड़ा धनी है। **– अश्वघोष**

❖ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग प्राप्त करने के समान है। **– वेदव्यास**

❖ बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है।

– चाणक्य

❖ अन्जानी राहों पर वीर ही आगे बढ़ा करते हैं। कायर तो परिचित राह पर तलवार चमकाते हैं। **– नेपोलियन बोनापार्ट**

❖ मित्रता की गहराई परिचय की लम्बाई पर निर्भर नहीं करती। **– रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

❖ वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहता है पर अपनी छाया में दूसरों का ताप दूर करता है।

– तुलसीदास

❖ जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता कामयाबी उसकी दासी है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

❖ सत्याग्रह बलप्रयोग के विपरीत होता है। हिंसा के सम्पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है।

– महात्मा गाँधी

❖ कठोर कार्य ही चरित्र को सहनशील, सहिष्णु, वीर, बलवान बनाने के लिए ईश्वर द्वारा भेजे जाते हैं।

– लोकमान्य तिलक

❖ काम की समाप्ति संतोषप्रद हो तो परिश्रम की थकान याद नहीं रहती। **– कालिदास**

❖ अपने अनुभव का साहित्य किसी दर्शन के साथ नहीं चलता वह अपना दर्शन पैदा करता है। **– कमलेश्वर**

❖ करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी पिघला देती है। **– सुदर्शन**

❖ यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो।

-स्वामी शरणानन्द

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode on 10th of every month
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 20th of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd.No.DL(N)136/2021-2023
: License No. U (DN) -23/2021-2023
: Licensed to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं 'निरंकारी वेबसाइट' पर

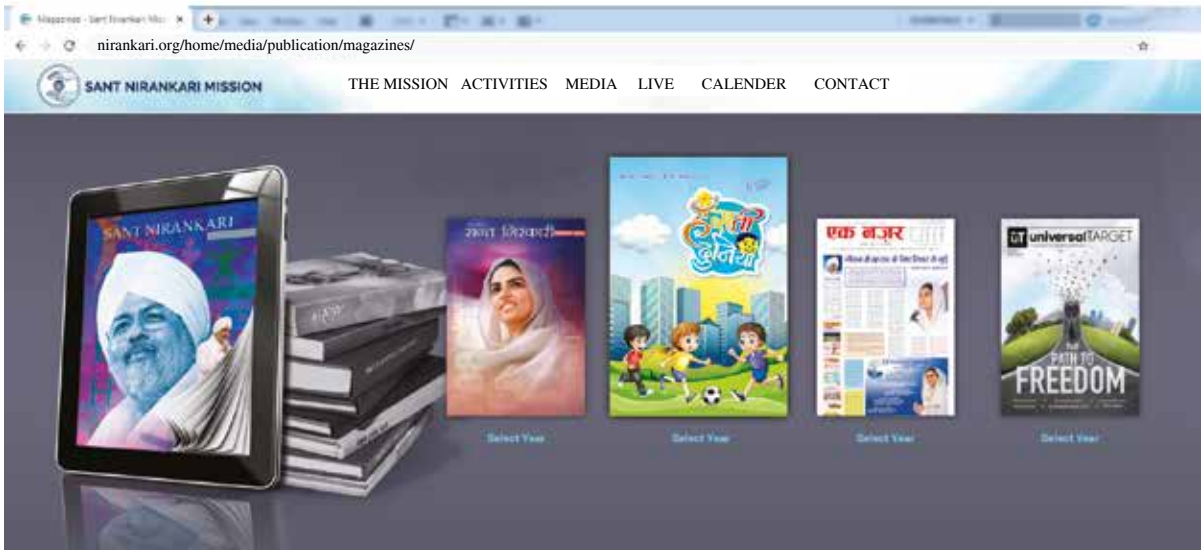

निरंकारी वेबसाइट पर सभी भाषाओं की 'हँसती दुनिया' , 'सन्त निरंकारी' एवं 'एक नज़र' को पढ़ने के लिए इन निर्देशों का पालन करें–

www.nirankari.org को **open** करेंगे तो **Main** पेज पर आपको **THE MISSION, ACTIVITIES, MEDIA and GALLERY** दिखाई देंगे। आपको **MEDIA** के **PUBLICATIONS option** को क्लिक करना है। यहाँ आपको सम्पूर्ण अवतार बाणी, सम्पूर्ण हरदेव बाणी, **E-BOOKS, Articles** और **Magazines** दिखाई देंगे। **Magazines** को क्लिक करते ही सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र तथा **Universal Target** के पेज खुल जाएंगे। यहाँ आप जो भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं, पढ़ सकते हैं।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि **एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–**

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

– प्रबन्ध सम्पादक

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्प्लेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।